RNI NO-UPHIN/2023/84340

सबसे तेज प्रयागराज

सब पर नजर, सटीक खबर

नगर संस्करण | hpshukla50@gmail.com | सोमवार, 15 जुलाई 2024 | वर्ष: 01, अंक: 121, पृष्ठ: 8, मूल्य: 2 रू. | प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

ट्रम्प पर हुए हमले से बेहद चिंतित हूं : नरेंद्र मोदी

एजेंसी

वाशिंगटन। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प पर चुनावी रैली के दौरान हुए जानलेवा हमले की रविवार को कड़ी निंदा करते हुए गहरी चिंता जतायी।

श्री मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर आज यहां कहा,' मेरे मित्र, पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पर हुए हमले से बेहद चिंतित हूं। घटना की कड़ी निंदा करता हूं। राजनीति और लोकतंत्र में हिंसा का कोई स्थान नहीं है। उनके

शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं। हमारी संवेदनाएं और प्रार्थनाएं मृतकों के परिवार, घायलों और अमेरिकी लोगों के साथ हैं।' श्री ट्रम्प करीब सवा छह बजे पेंसिल्वेनिया के बटलर में चुनावी रैली के दौरान अज्ञात बंदूकधारी की गोलीबारी में घायल हो गए। अंगरक्षकों ने हमलावर को मार गिराया।

इस गोलीबारी में कम से कम एक व्यक्ति की मौत हो गयी और दो गंभीर रूप से घायल हो गये। पूर्व राष्ट्रपति इस हमले में बाल-बाल बच गये। गोली उनके दाहिने कान से लगकर गुजरी और वह तुरंत पोडियम पर ही झुक गये। इसके बाद अंगरक्षकों ने उन्हें चारों तरफ से घेर लिया। वह पूरी तरह स्वस्थ हैं।

खडगे-राहुल ने डोनाल्ड ट्रंप पर हुए हमले पर जताई गहरी चिंता

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे तथा पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पर चुनावी सभा के दौरान हुई जानलेवा हमले पर गहरी चिंता व्यक्त करती हुई कहा है कि किसी भी लोकतांत्रिक और साध्य समाज में इस तरह की घटनाओं के लिए कोई जगह नहीं है। कांग्रेस नेताओं ने श्री ट्रंप के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करते हुए इस घटना में मारे गए लोगों के परिजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की है। उन्होंने इसे जघन्य अपराध बताया और कहा कि वे इसकी कड़ी निंदा करते हैं।

श्री खडगे ने कहा अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पर हुए हमले से बेहद आहत हूं। मैं इस जघन्य कृत्य की कड़ी निंदा करता हूं। किसी भी लोकतंत्र और सभ्य समाज में ऐसी हिंसा का

कोई स्थान नहीं है।उन्होंने कहा भारत अमेरिका के लोगों के साथ खड़ा है, हम मृतको के परिवार के लोगों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

श्री गांधी ने कहा मैं अमेरिक के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की हत्या के प्रयास से बेहद चिंतित हूं। ऐसे कृत्यों की कड़े शब्दों में निंदा की जानी चाहिए। उनके शीघ्र और पूर्ण स्वस्थ होने की कामना करता हूं।

अब प्रभारी रावल अमरनाथ नंबूदरी संभालेंगे बदरीनाथ धाम की पूजा अर्चना का दायित्व

गोपेश्वर। विश्वप्रसिद्ध श्री बदरीनाथ के नायब रावल अमरनाथ नंबूदरी बदरीनाथ धाम के प्रभारी मुख्य पुजारी रावल होंगे। आदि गुरू शंकराचार्य के कालखंड से अभी तक बीस रावल धाम में पूजा अर्चना का सेवा दायित्व निभा चुके है अब इक्कीसवें रावल 30 वर्षीय नायब रावल अमरनाथ नंबूदरी रावल प्रभारी रावल पद का दायित्व संभालेंगे। नायब रावल अमरनाथ नंबूदरी को रावल पद पर विराजमान किये जाने के लिए शनिवार से बदरीनाथ धाम में प्रातः नौ बजे से धार्मिक अनुष्ठान शुरू हो गये है। गौरतलब है कि बदरीनाथ धाम के निवर्तमान रावल ईश्वर प्रसाद नंबूदरी ने कुछ समय पहले स्वास्थ्य कारणों से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के लिए आवेदन किया था वह विगत दस वर्षों तक रावल रहे। श्री बदरीनाथ केदारनाथ मंदिर समिति ने उनके स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति आवेदन को स्वीकार कर लिया है।

देवनानी ने योग विश्वविद्यालय के लिये भूमि चयन का किया निरीक्षण

अजमेर। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासूदेव देवनानी ने रविवार को अजमेर में 'आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, योग विश्वविद्यालय' के लिये भूमि चयन के लिए अधिकारियों के साथ भूमि का निरीक्षण किया। अजमेर उत्तर विधानसभा क्षेत्र के माकड़वाली में उन्होंने जिला कलक्टर डा.भारती दीक्षित एवं अन्य अधिकारियों के साथ निरीक्षण किया। श्री देवनानी ने बताया कि 37 वर्ष पूर्व महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के बाद अब अजमेर को आयुर्वेद विश्वविद्यालय का तोहफा मिला है। बजट घोषणा को जल्द से जल्द क्रियान्वत कराने के लिए भूमि चयन प्रक्रिया की जा रही है। इसके लिए 80 बीघा भूमि का चयन किया जाना प्रस्तावित है। उन्होंने कहा कि प्रस्तावित विश्वविद्यालय में चिकित्सा की तीनों विधाओं आयुर्वेद, प्राकृतिक एवं योग से जुड़े काम एवं शिक्षा सम्भव हो सकेंगे।

कर्नाटक में डेंगू का कहर, अब तक मिले 9082 मामले; सात की मौत

एजेंसी

बेंगलुरु। कर्नाटक में डेंगू के मामलों में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। राज्य में इस साल अब तक 9 हजार 82 मामले मिल चुके हैं। कर्नाटक के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग ने आंकड़ों को लेकर अपडेट दिया है। इसके मुताबिक बीते 24 घंटे में राज्य में डेंगू के कुल 424 पॉजिटिव मामले दर्ज किए गए हैं। इस साल की शुरुआत से अब तक की बात करें तो 9082 केस दर्ज किए गए हैं।

स्वास्थ्य विभाग के मुताबिक डेंगू से पीड़ित 119 मरीजों का अस्पताल में इलाज चल रहा है। 24 घंटे में एक भी मौत रजिस्टर नहीं हुई है, लेकिन इस साल अब तक सात लोग डेंगू के कारण अपनी जान गंवा चुके हैं। विभाग का दावा है कि 13 जुलाई को 2 हजार 557 लोगों का टेस्ट किया गया। तो वहीं इस साल कुल 66 हजार 298 लोगों का परीक्षण किया जा चुका है। ये सरकारी रिपोर्ट बताती है कि पिछले 24 घंटों में शून्य से एक साल

तक के 4 बच्चे डेंगू पीड़ित पाए गए।

वहीं, एक से 18 साल की उम्र के मरीजों की संख्या 168 है। 18 साल से ऊपर वाले मरीजों की संख्या 252 हैं। कुल मिलाकर 424 नए मरीज 24 घंटे में सामने आए हैं। बता दें कि कर्नाटक के स्वास्थ्य मंत्री दिनेश गुंडू राव ने डेंगू के बढ़ते मामलों को लेकर दिशा-निर्देश जारी किए।

डेंगू के बढ़ते मामलों को देखते हुए कर्नाटक सरकार ने पूरे राज्य में 'डेंगू वॉर रूम' स्थापित किए हैं।

सरकार द्वारा 10 जुलाई को जारी सर्कुलर में निर्देशित किया गया है कि इस कदम का उद्देश्य बीमारी के प्रभाव को कम करने के लिए डेंगू के मामलों की निगरानी और प्रबंधन को बढ़ाना है।ये वॉर रूम डेटा संग्रहण और स्थिति आकलन के लिए महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में कार्य करेंगे, जिससे डेंगू संकट पर समन्वित और समय पर प्रतिक्रिया सुनिश्चित होगी। पिछले साल राज्य में कुल 19,300 मामले दर्ज किए गए थे। 2019 में सबसे ज़्यादा मौतें हुईं, जब 17 मरीज़ों ने दम तोड़ दिया।

इंदौरवासी 11 लाख पौधे लगा बनाएंगे वर्ल्ड रिकॉर्ड : अमित शाह

एजेंसी

इंदौर। मध्य प्रदेश के इंदौर में रविवार (14, जुलाई) को 11 लाख पौधे लगाने का अभियान शुरू हो गया है। सूर्योदय के साथ इस कार्यक्रम की शुरुआत हुई। इंदौरवासी 11 लाख पौधे लगाकर वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराएंगे।

इस कार्यक्रम में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह भी शामिल होंगे। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कार्यक्रम को लेकर एक्स पर एक पोस्ट डाला। उन्होंने लिखा- आज एक विशेष दिन है, जब इंदौरवासी 11 लाख पौधे लगाकर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने जा रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किए गये 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के अंतर्गत मैं भी आज इंदौर (मध्य प्रदेश) के रेवती रेंज के बीएसएफ परिसर में पौधे लगाऊंगा।

अमित शाह ने कहा कि

पर्यावरण संरक्षण मोदी सरकार की सबसे बड़ी प्राथमिकताओं में से एक रहा है और वृक्षारोपण को सरकार ने जन-जन की चेतना का विषय बनाया है। साथ ही आज दोपहर में मध्य प्रदेश के सभी जिलों के 55 प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस का शुभारंभ भी करूंगा। इससे पहले मध्य प्रदेश सरकार में मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने रविवार सुबह पौधारोपण कर कार्यक्रम का आगाज किया। इस दौरान उनके साथ अधिकारी भी मौजूद रहे। कैलाश विजयवर्गीय ने एक्स अकाउंट पर लिखा- आज बनेगा विश्व कीर्तिमान, आज 14 जुलाई है और आज इंदौर शहर में वृहद पौधारोपण अभियान के अंतर्गत 11 लाख पौधे लगाकर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया जायेगा। इस अवसर पर आज सुबह पौधों का पूजन कर पौधारोपण का शुभारंभ किया। मेरे साथ महापौर, कलेक्टर आशीष सिंह, एमआईसी राजेंद्र राठौर समेत बीजेपी नेता उपस्थित रहे।बता दें कि प्रधानमंत्री मोदी ने 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के शुरूआत की थी। उन्होंने देशवासियों से 'एक पेड़ मां के नाम' लगाने की अपील की थी। इसके बाद से ही देशभर में राज्य सरकारों द्वारा पौधारोपण अभियान चलाया जा रहा है।

सत्यम् शिवम् शुभम् ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स

College Code : 01083

टिकरी, कौड़िहार, प्रयागराज

B.A. हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, प्रा0 इतिहास, गृह विज्ञान, दर्शन शास्त्र राजनीति विज्ञान, उर्दू, भूगोल, समाजशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, अर्थशास्त्र

M.A. हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, समाजशास्त्र, गृह विज्ञान, प्रा0 इतिहास

B.Sc. Agriculture B.Com/M.Com

B.Sc./M.Sc./D.El.Ed. (BTC) B.Pharma/D.Pharma

LL.B. B.A. L.L.B (प्रस्तावित) I.T.I. (इलेक्ट्रीशियन, फिटर, कोपा)

छात्रवृत्ति की सुविधा भी उपलब्ध

Mob. 9451181332, 9956930129

एक मधेशी बरामद, तीन गिरफ्तार

सबसे तेज प्रयागराज
कुशीनगर। पुलिस अधीक्षक धवल जायसवाल के निर्देशन एवं अपर पुलिस अधीक्षक रितेश कुमार सिंह के पर्यवेक्षण व क्षेत्राधिकारी सदर अभिषेक प्रताप अजेय कुशीनगर के नेतृत्व में गोवंशी पशुओं की तस्करी के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में रविवार को थानाध्यक्ष विनय कुमार मिश्रा मय पुलिस टीम द्वारा सोहरौना नहर के पास से बध हेतु ले जाये जा रहे 01 राशि बछड़ा, एक झोले में रस्सी,एक अदद लकड़ी का ठीहा,एक अदद अवैध चाकू,एक अदद बांका के साथ अभियुक्तगण 1- इम्तियाज उर्फ मंटू पुत्र मो0 खलील सा0 वार्ड न0 26 रफी अहमद किदवई नगर छावनी थाना को0 पडरौना जनपद कुशीनगर, 2-मकबूल अली पुत्र शब्बीर सा0 वार्ड न0 26 रफी अहमद किदवई नगर छावनी थाना को0 पडरौना जनपद कुशीनगर, 3- मीरहसन उर्फ गुड्डू पुत्र अलीमुल्लाह सा0 वार्ड न0 26 रफी अहमद किदवई नगर छावनी थाना को0 पडरौना जनपद कुशीनगर को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की गयी।

त्योहार को लेकर सीओ ने बीट प्रभारी के साथ की गोष्ठी

सबसे तेज प्रयागराज
कुशीनगर। पुलिस अधीक्षक कुशीनगर धवल जायसवाल के निर्देशन में क्षेत्राधिकारी कसया कुन्दन सिंह द्वारा रविवार को थाना कसया पर आगामी त्योहारों श्रावण मास, मुहर्रम को सकुशल, शान्तिपूर्ण वातावरण में सम्पन्न कराने हेतु थाना कसया के बीट प्रभारी/बीपीओ व अन्य पुलिसकर्मियों के साथ गोष्ठी की गयी एवं त्योहारों को सकुशल सम्पन्न कराने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये।
इसके अतिरिक्त विवेचकों के लंबित विवेचनाओं की समीक्षा की गयी तथा उनके शीघ्र व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया तथा थानों पर आईजीआरएस, जन शिकायत, महिला हेल्प डेस्क पर प्राप्त प्रार्थना पत्र के निस्तारण की भी समीक्षा की गयी एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिये गयें।

पिपरी पुलिस के प्रयास से पति-पत्नी साथ रहने को हुए राजी

ब्यूरो चीफ
सबसे तेज प्रयागराज
कौशांबी । थाना पिपरी में पति पत्नी के विवाद के संबंध में प्रार्थना पत्र प्राप्त होने पर थाना पिपरी पुलिस उप निरीक्षक भगवान यादव व महिला उप निरीक्षक सरिता शिकारी और महिला आरक्षी प्रीति उपाध्याय द्वारा दोनों पति पत्नी की थाना पिपरी में काउंसलिंग कर उभय पक्षों के बीच मध्यस्थता कराकर ढाई साल के बाद विवाहित जोड़े को मिलाया गया । दोनों पक्षों को समझाते हुए पति-पत्नी को उनके जीवन की पारिवारिक कर्तव्य को बताते हुए समझाया गया। दोनों पति-पत्नी द्वारा बताया गया कि अब हम दोनों के बीच किसी प्रकार का कोई मनमुटाव नहीं रह गया है। अब हम दोनों अपनी खुद की सहमति से सुलह समझौता करना चाहते हैं । दोनों पक्षों द्वारा व्यक्त किया गया, कि अब हम दोनों एक दूसरे के साथ प्रेम पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे ।

गड़ासे से काटकर चाची की बेरहमी से हत्या- आलाकत्ल के साथ हत्यारोपी पहुंचा थाने किया आत्म-समर्पण

सबसे तेज प्रयागराज
कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के समसपुर गांव में रविवार को भतीजे ने अपनी चाची की गड़ासे से निर्ममतापूर्वक काटकर बड़ी बेरहमी से हत्या कर दी है दिनदहाड़े निर्मम हत्या की घटना को अंजाम देने के बाद हत्यारोपी भतीजा आलाकत्ल के साथ थाने पहुंचकर आत्मसमर्पण कर दिया है दिनदहाड़े कत्ल की जानकारी मिलते ही पूरे गांव क्षेत्र में दहशत और भय का माहौल बन गया घटना स्थल पर लोगों की भीड़ लग गई मामले की सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने महिला के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है भतीजे ने चाची का कत्ल क्यों किया इसका खुलासा खबर लिखे जाने तक नहीं हो सका है। जानकारी के मुताबिक चरवा थाना क्षेत्र के समसपुर गांव में रविवार की शाम लगभग 5 बजे संगीता देवी उम्र 30 वर्ष पत्नी कृष्ण कुमार उर्फ मोनू रैदास घर के बाहर बैठी थी इसी बीच उसका भतीजा मनफूल गौतम पुत्र संतोष कुमार धारदार हथियार गड़ासा ले कर पहुँचा और अपने चाची को गाली गलौज करते हुए लालकारते हुए उस पर ताबड़तोड़ प्रहार कर दिया लगातार गड़ासे के प्रहार से चाची खून से लथपथ होकर जमीन पर गिर पड़ी और घटना स्थल पर तड़प तड़प कर दम तोड़ दिया है चाची की चीख पुकार सुनकर घटनास्थल पर आसपास के लोगों की भीड़ लग गई हत्या की घटना की जानकारी जंगल की आग की तरह पूरे गांव में फैल गई चाची की हत्या के बाद हत्यारा भतीजा आलाकत्ल लेकर थाने पहुंच गया और आला कत्ल के साथ पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया है पुलिस ने आरोपी को हिरासत में ले लिया उससे पूछताछ कर रही है महिला की हत्या क्यों हुई है यह रहस्य बरकरार है।

सात राज्य के 13 विधानसभा उपचुनाव में इंडिया गठबंधन की प्रचंड बहुमत से जीत की खुशी में कांग्रेस ने मिठाई बांट कर मनाई खुशी

ब्यूरो चीफ
सबसे तेज प्रयागराज
कौशांबी। कांग्रेस पार्टी एवं इंडिया गठबंधन की सात राज्यों के 13 विधानसभा में प्रचंड बहुमत जीत की खुशी में जिले के चरवा नगर पंचायत में कांग्रेस नेताओं ने लड्डू खिलाकर ग्राम वासियों व नगर वासियों के साथ मिलकर जश्न मनाया।
जिला कांग्रेस कमेटी कौशांबी के जिलाध्यक्ष गौरव पाण्डेय ने कहा कि यह जो 7 राज्यों में इंडिया गठबंधन एवं कांग्रेस पार्टी की 13 विधानसभा में प्रचंड बहुमत से जीत हुई है यह जीत लोकतंत्र की जीत है यह जीत संविधान बचाने की जीत है यह जीत युवा, छात्र और महिलाओं की जीत

है जिनके भविष्य के साथ भाजपा सरकार ने खिलवाड़ किया है मैं कौशांबी जिले के सभी देवतुल्य जनता को इस जीत की बहुत-बहुत बधाई देता हूं।
इस मौके पर कांग्रेस की छात्र विंग एनएसयूआई के जिलाध्यक्ष अमित द्विवेदी "आजाद" ने कहां की इस जीत की बधाई मैं अपने जननायक नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को देना चाहूंगा कि आपने सदन में मजलूम और बेसहारा की आवाज को उठाया और मैं 7 राज्यों की सभी सम्मानित जनता को यह बधाई देना चाहूंगा कि अपने लोकतंत्र को बचाने में अपना मतदान दिया सभी को बहुत-बहुत बधाई।
युवा कांग्रेस के जिला उपाध्यक्ष अलकमा उस्मानी ने कहा कि सात राज्यों की जनता ने भाजपा सरकार को करारा जवाब दिया है कि यह देश भाईचारा एकता से चलता है यह देश प्रेम और सौहार्द से चलता है जिसका जीता जागता सबूत इन 7 राज्य और 13 विधानसभा के चुनाव में जनता ने दिया मैं 7 राज्य की देव तुल्य जनता को इस जीत की बहुत-बहुत बधाई देता हूं।
कार्यक्रम का आयोजन नगर पंचायत अध्यक्ष चरवा निक्की पाण्डेय ने किया इस जश्न की खुशी में कौशांबी जिले के वरिष्ठ नेता राम बहादुर त्रिपाठी महेंद्र मिश्रा ,अशोक पाण्डेय (सभासद) नूरुद्दीन जमा, निक्की पाण्डेय, एनएसयूआई के प्रदेश महासचिव उदय यादव, मोहम्मद मसरूर(शाहरुख), उज्वल यादव नेवादा, हेमंत रावत , गुड्डू रैदास, रामप्रकाश, अरविंद यादव, शिवकुमार, पवन यादव छेदीलाल पाल ,अजय सिंह विनोद सरोज, विकास राजपूत, रमेश गौतम और समस्त ग्रामवासी मौजूद रहे।

एसडीएम,सीओ खड्डा द्वारा संयुक्त रुप से हनुमानगंज पर "आगामी त्योहारों को सकुशल सम्पन्न कराये जाने के दृष्टिगत की गयी पीस कमेटी मीटिंग"

सबसे तेज प्रयागराज
कुशीनगर। पुलिस अधीक्षक धवल जायसवाल के निर्देशन में रविवार को एसडीएम खड्डा व क्षेत्राधिकारी खड्डा उमेश चन्द भट्ट द्वारा संयुक्त रुप से थाना हनुमानगंज पर आगामी त्यौहारों श्रावण मास, मोहर्रम आदि को जनपद में सकुशल सम्पन्न कराने, सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था सुदृढ रखने तथा शांति एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाये रखने हेतु पीस कमेटी मीटिंग का आयोजन किया गया। मीटिंग में उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों, धर्मगुरुओं, जनप्रतिनिधियों व समाजसेवियों से

अपील की गयी कि सभी लोग एक दूसरे की भावनाओं का सम्मान करें, जनपद में शांति व्यवस्था बनाये रखें, सामप्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने की कोशिश करने वालों/असामाजिक तत्वों/किसी भी प्रकार की आपराधिक अवांछित गतिविधियों दिखाई देने पर इसकी सूचना तत्काल पुलिस को दे, किसी प्रकार की अफवाह पर ध्यान न दें बल्कि अफवाह की पुष्टि उच्चाधिकारियों से करें तथा जिले में सौहार्दपूर्ण वातावरण का माहौल बनाये रखने में पुलिस व प्रशासन का सहयोग करें साथ ही सोशल मीडिया पर ऐसे कमेंट न करें जिससे किसी की धार्मिक भावनाएं आहत हों तथा किसी भी प्रकार की भडकाऊ/गलत/अशोभनीय पोस्ट शेयर न करें, जनपदीय पुलिस द्वारा कड़ी निगरीनी की जा रही है।

लाखों रुपए की अवैध स्मैक बरामद,दो गिरफ्तार

सबसे तेज प्रयागराज
बाराबंकी। कप्तान दिनेश कुमार सिंह के निर्देश पर रामसनेहीघाट पुलिस क्षेत्र में स्मैक की सप्लाई करने वाले एक आरोपी को गिरफ्तार कर लाखों की स्मारक बरामद करते हुए जेल भेज दिया।
थाना रामसनेहीघाट पुलिस टीम द्वारा रविवार को अभियुक्त अर्जुन यादव पुत्र रमेश यादव निवासी सिल्हौर थाना असन्द्रा जनपद बाराबंकी , गुड्डू यादव पुत्र रामकेवल यादव निवासी ऐलहना थाना बाबा बाजार जनपद अयोध्या को गिरफ्तार किया गया। अभियुक्तगण के कब्जे से कुल 110 ग्राम अवैध स्मैक बरामद कर जेल भेज दिया।

4 किलो 600 ग्राम अवैध पोस्ता छिलका बरामद

सबसे तेज प्रयागराज
बाराबंकी। पुलिस अधीक्षक दिनेश कुमार सिंह के निर्देश पर क्षेत्र में अवैध पोस्ता छिलका की सप्लाई करने वाले दो आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर साढे चार किलो पोस्ता का छिलका बरामद कर लिखा पढ़ी किया।

असन्द्रा पुलिस टीम द्वारा रविवार को अभियुक्त रामनरेश उर्फ छोटू पुत्र रामसिंह निवासी ग्राम पासिनपुरवा देवकली थाना कोठी जनपद बाराबंकी, अमरकेश पुत्र मोतीलाल निवासी ग्राम जैनाबाद थाना सतरिख जनपद बाराबंकी नहर पुलिया कैथानी मोड़ के पास से गिरफ्तार किया गया। अभियुक्तगण के कब्जे से कुल 04 कि0 600 ग्रा0 अवैध पोस्ता छिलका बरामद किया गया।

5 वारण्टी अभियुक्त को पुलिस ने किया गिरफ्तार

सबसे तेज प्रयागराज
कुशीनगर। पुलिस अधीक्षक धवल जायसवाल के निर्देशन में वांछित/वारण्टी अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के तहत रविवार को थाना नेबुआ नौरंगिया पुलिस द्वारा पांच वारण्टी नन्दन उर्फ रामानन्द पुत्र तुलसी सा0 लक्ष्मीपुर उर्फ कुर्मीपट्टी टोला बलुअही थाना नेबुआ नौरंगिया जनपद कुशीनगर, नारायन पुत्र रामदेव साकिन लक्ष्मीपुर उर्फ कुर्मीपट्टी टोला बलुअही थाना नेबुआ

नौरंगिया, रामहरि पुत्र सुदामा साकिन कोहडा थाना नेबुआ नौरंगिया, हरि नोनिया पुत्र श्यामसुन्दर साकिन मडार बिन्दवलिया नोनिया पट्टी, जैन उर्फ जयनारायन पुत्र गुनई साकिन किशुनपुर विजयपुर थाना नेबुआ नौरंगिया जनपद कुशीनगर को गिरफ्तार किया।

2 शातिर चोरों को किया गिरफ्तार, कब्जे से चोरी की बैट्री, तमंचा बरामद

सबसे तेज प्रयागराज
बाराबंकी । कप्तान दिनेश कुमार सिंह के निर्देश पर असंद्रा पुलिस चोरी के आरोपियों की तलाश में मुखबिर की सूचना पर चोरी के दो आरोपी को गिरफ्तार कर चोरी की बैटरी तमंचा कारतूस बरामद करते हुए लिखा पढ़कर जेल भेज दिया।
थाना असन्द्रा पुलिस टीम द्वारा रविवार को चोरी के दो वांछित अभियुक्तगण अनिल कन्नौजिया पुत्र स्व0 जगन्नाथ . नन्दलाल निषाद पुत्र मंगल प्रसाद निवासीगण ग्राम मल्लाहन का पुरवा मजरे द्वारिकापुर थाना मवई जनपद अयोध्या को वासूपुर रतौली मार्ग के पास से गिरफ्तार किया गया। अभियुक्तगण के कब्जे से 01 अदद चोरी की बैट्री, 01 अदद तमंचा मय 01 अदद जिंदा कारतूस .12 बोर व एक अदद मोटरसाईकिल बरामद किया गया।

बारात गए युवक की चरवा में मिली लाश

सबसे तेज प्रयागराज
कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के पूरे अयोध्या व रैय्या देह माफी के बीच रेशम यादव के चरी के खेत में रविवार की सुबह एक युवक की रक्त रंजित डेड बॉडी पड़ी देख लोगों के होश उड़ गए। युवक की गला दबाकर व ईंट से कूच कर हत्या कर के लाश को फेंक कर हत्यारे फरार हो गए हैं। युवक के नाक से व मुंह से ब्लड भी निकला हुआ है ।युवक की उम्र लगभग 42 वर्ष आंकी जा रही है। युवक लाल रंग की टी शर्ट व नीले रंग की लोवर पहने हुए है। डेड बॉडी के कुछ दूरी पर पीले रंग का गमछा पड़ा हुआ है। मृतक के शव से कुछ दूरी पर मोटर साइकिल सीडी डांन जिसका नम्बर वढ 73इ 4159 को पूरे अयोध्या के बीरे यादव के पुराने खंडहर नुमा नलकूप पर फेंक दिया हैं।
ग्रामीणों ने डायल 112 पुलिस को सूचना दिया। मौके पर डायल 112 पुलिस पहुंच कर स्थानीय थानाध्यक्ष चरवा को सूचित किया। मौके पर थानाध्यक्ष चरवा मयफोर्स के साथ पहुंच कर ग्रामीणों व राहगीरों के द्वारा डेड बॉडी की शिनाख्त करवाया। युवक की शिनाख्त कोखराज थाना क्षेत्र के रूप में हुई है पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। जानकारी के मुताबिक कोखराज थाना क्षेत्र के नगर पालिका परिषद भरवारी के मलखा महेवा निवासी सदल उम्र 42 वर्ष पुत्र मिश्रीलाल पासी भरवारी क्षेत्र से गयी बारात में पैगंबरपुर महगाव थाना संदीपन घाट गए थे लेकिन बारात से उन्हें कुछ लोग उठा ले गए हैं और चरवा थाना क्षेत्र में उनकी हत्या कर शव को खेत में फेंक दिया है घटना स्थल से कुछ दूर पर एक मोटरसाइकिल पड़ी थी जो भरवारी के रोही गांव के एक व्यक्ति की बताई जाती है इससे आशंका जताई जाती है कि मोटरसाइकिल से मृतक को साथ में ले जाकर के हत्या की घटना को अंजाम दिया गया है हत्या की जानकारी मिलते ही रोते बिलखते परिवार के लोग भी मौके पर पहुंच गए हैं मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है बारात गए युवक की हत्या क्यों की गई है यह रहस्य बरकरार है।

महेवा घाट पुलिस ने वारंटी को किया गिरफ्तार

सबसे तेज प्रयागराज
कौशांबी। पुलिस अधीक्षक बृजेश कुमार श्रीवास्तव के निर्देश पर महेवा घाट पुलिस वारंटी की तलाश में चेकिंग के दौरान एक वारंटी को गिरफ्तार कर लिखा पड़ी करते हुए जेल भेज दिया।
महेवाघाट पुलिस उ0नि0 आत्मा प्रसाद यादव मय हमराह पुलिस बल द्वारा वारंटी अभियुक्त दिनेश सिंह पुत्र छेदी सिंह नि० ग्राम निगहा थाना महेवाघाट जनपद कौशाम्बी को गिरफ्तार किया गया।

वाहन चेकिंग के दौरान की गई कार्यवाही

सबसे तेज प्रयागराज
कौशांबी। जनपद में चलाये जा रहे यातायात से सम्बन्धित अभियान के क्रम में जनपद स्तर पर विभिन्न थानों व यातायात पुलिस द्वारा यातायात नियमों का पालन न करने वालों के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई चेकिंग के दौरान दो-पहिया/चार पहिया वाहनों को चेक किया गया। यातायात नियमों का उल्लघन करने वाले 156 वाहनों का ई-चालान किया गया।

मिशन शक्ति टीम ने महिलाओं एवं छात्राओं को किया जागरूक

स्वाती मिश्रा
सबसे तेज प्रयागराज
कौशांबी। रविवार को मिशन शक्ति के तहत थाना पश्चिम शरीरा, महिला थाना, संदीपन घाट थाने के महिला पुलिसकर्मियों ने छात्राओं व महिलाओं को जागरूक किया।
उन्होंने छात्राओं/महिलाओं के साथ हो रहे किसी भी अवांछित गतिविधि की जानकारी तत्काल हेल्प लाइन को देने की सलाह दी। बताया कि इसमें पीड़ित शिकायतकर्ता का नाम गोपनीय रखा जाता है व सूचना मिलते ही तत्काल कार्रवाई होती है। टीम ने बाजार और मंदिर परिक्षेत्र का भ्रमण कर छात्राओं व महिलाओं को जागरूक करते हुए 1090 महिला हेल्प लाइन, 1098 चाइल्ड हेल्प नंबर, 112 इमरजेंसी नंबर, 181 वन स्टाप महिला हेल्प लाइन, 1930 साइबर हेल्प नंबर आदि के बारे में विस्तार से बताया।

हमारी भावी पीढ़ी संस्कृति की बने संवाहक : राजेंद्र देव त्रिपाठी

रानी रेवती देवी में क्षेत्रीय संस्कृति बोध परियोजना अभियान का शुभारंभ

सबसे तेज प्रयागराज

प्रयागराज । विद्या भारती से संबद्ध काशी प्रांत के रानी रेवती देवी सरस्वती विद्या निकेतन इंटर कॉलेज राजापुर, प्रयागराज में काशी प्रांत के संकुल प्रमुख एवं जिला संकुल प्रमुखों की बैठक प्रधानाचार्य बांके बिहारी पांडे के संयोजन में आज हुई जिसमें भारत की गौरवमयी संस्कृति को जन-जन तक पहुंचाने के लिए और उनके हृदय में गौरव का भाव स्थापित करने के लिए विद्या भारती संस्कृति संस्थान, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) द्वारा संस्कृति बोध परियोजना महाअभियान के अंतर्गत समस्त जिला प्रमुखों एवं संकुल प्रमुखों को संबोधित करते हुए क्षेत्रीय संस्कृति बोध परियोजना पूर्वी उत्तर प्रदेश के

अभियान प्रमुख राजेंद्र देव त्रिपाठी ने कहा कि हमारी भावी पीढ़ी संस्कृति की संवाहक बने और जो मूल्यों का पतन आज दीर्घकालीन दासता के कारण दिखाई दे रहा है उसका समूल निराकरण करके संस्कृति का यश सर्वत्र विस्तारित करें, इस दृष्टि से विद्या भारती ने विपुल व उच्चकोटि का साहित्य भी तैयार किया है जिसमें कक्षा 3 से 12 तक अंग्रेजी व हिंदी माध्यम में संस्कृति ज्ञान परीक्षा की सचित्र पुस्तकें तैयार की है ह्न

क्षेत्रीय संस्कृति बोध परियोजना पूर्वी उत्तर प्रदेश के अभियान प्रमुख राजेंद्र देव त्रिपाठी ने कहा कि विद्या भारती इस योजना को प्रत्येक भारतीय तक ले जाने के लिए कटिबद्ध है , इस दृष्टि से विद्या भारती ने संकल्प लिया है कि विद्या भारती का प्रत्येक घटक 15 दिनों का अभियान चलाएगा तथा इस अभियान के द्वारा समाज के समस्त प्रबुद्ध वर्ग को अपनी गौरवशाली संस्कृति के उज्जवल पक्षों का बोध कराएगा।

इसके पूर्व प्रांतीय संस्कृति बोध प्रमुख गिरिवर शंकर त्रिपाठी ने सभी संकुल प्रमुखों एवं जिला प्रमुखों से इस अभियान की विस्तृत आख्या का संकलन करते हुए कहा कि इस कार्य के लिए हमारे विद्यालयों के सभी आचार्य, पूर्व छात्र, मातृ भारती एवं प्रबंध समिति के सदस्य समाज के न्यूनतम 10 लोगों को संस्कृति बोध परियोजना से जोड़ेंगे। उन्होंने कहा कि इस परीक्षा का आयोजन संपूर्ण देश में किया जाएगा । इस अवसर पर जन शिक्षा प्रमुख कमलेश एवं प्रधानाचार्य विक्रम बहादुर सिंह, युगल किशोर मिश्रा, दिनेश दुबे, कमलेश, प्रमोद , दिनेश पांडे सहित लगभग 40 जिला प्रमुख एवं संकुल प्रमुख उपस्थित रहे ।

इसके पूर्व अतिथियों का परिचय, स्वागत एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रधानाचार्य बांके बिहारी पांडे ने तथा संचालन दिनेश कुमार शुक्ला ने किया ।

फाफामऊ थाने पर तैनात हेड कांस्टेबल की सड़क हादसे में मौत

सबसे तेज प्रयागराज

फाफामऊ । थाना पर तैनात हेड कांस्टेबल की मलाक हरहर में गस्त के दौरान शनिवार की देर रात अज्ञात वाहन की टक्कर से हेड कांस्टेबल की मौत हो गई। रविवार को सुबह राहगीरों ने सड़क के बगल गढ्ढे में लाश पड़ी देख पुलिस को सूचित किया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर अज्ञात वाहन के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु भेज दिया। दीवान के मौत की खबर जैसे ही उनके परिजनों को हुई तो घर में कोहराम मच गया। पुलिस के मुताबिक वाराणसी जनपद के चौबे पुर थाना अंतर्गत सोहनी बरथना खुर्द निवासी वीरेंद्र कुमार यादव पुत्र राम सूरत करीब छः महीने पूर्व फाफामऊ थाने पर हेड कांस्टेबल के पद पर तैनाती हुई थी। शनिवार की रात को मलाक हरहर क्षेत्र में गस्त करने गए थे। देर रात बाइक से गस्त कर रहे थे तभी किसी अज्ञात वाहन ने जोरदार टक्कर मार दिया टक्कर लगने से निमार्णाधीन सड़क के बगल पानी भरे गड्ढे में जा गिरे जिससे उनकी मौत हो गई। रात अधिक होने से किसी को घटना के बारे में जानकारी नही हुई। सुबह करीब छह बजे राहगीरों ने सड़क के बगल गढ्ढे में पड़ी लाश को देख पुलिस को सूचना दिया। पुलिस ने मौके पर पुलिस ने पहुंचकर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु भेज दिया। दीवान की मौत की खबर जैसे ही उनके परिजनों को हुई तो पत्नी सुमन देवी का रो रो कर बुरा हाल था। उनके दो बेटे बड़ा बेटा वैभव और छोटा विपुल है।

सातवी पर निकला मातमी अलम का जुलूस

सबसे तेज प्रयागराज

लालगोपालगंज /प्रयागराज। स्थानीय कस्बा स्थित मोहर्रम की सातवीं को हजरत अब्बास अलमदार की याद में अलम जुलूस निकाला गया। अजादारों ने मातमी जुलूस नौहा मर्सिया के साथ हाथों में धार्मिक ध्वज लिए अपने पारंपरिक मार्गों का भ्रमण करते हुए खानजहानपुर अहलादगंज तख्त मोहल्ला पहुचकर जुलूस का समापन किया । इस दौरान इंस्पेक्टर नवाबगंज, चौकी प्रभारी शरद सिंह पर्याप्त पुलिस बल के साथ उपस्थित रहे।

अंजुमन इमामिया इमामगंज, अंजुमन हुसैनी रजागंज और अंजुमन हैदरी जहीदपुर के अजादारों ने कर्बला में शहीद हजरत अलमदार की दाद में मातमी जुलूस निकाला। अकीदतमंदों ने हाथों में धार्मिक ध्वज लिए नजर आए? नौहा और मर्सिया की पुरदर्द आवाज पर सीनाजनी की गई। जुलूस दोपहर दो बजे से उठकर अपने परंपरागत मार्गों से चलकर देर शाम खानजहानपुर इमाम चौक पर संपन्न हुआ। जुलूस को सकुशल संपन्न कराने के लिए इंस्पेक्टर नवाबगंज , चौकी प्रभारी शरद सिंह हमराहियों के साथ मौजूद रहे।

अदब-ओ-एहतेराम के साथ उठाई करेली, लेबर चौराहे की मेंहदी

सबसे तेज प्रयागराज

प्रयागराज। माहे मोहर्रम की 6 तारीख के खास मौके पर गुलामाने पंजतन एकता कमेटी की जानिब से करेली, लेबर चौराहा ढाल के नीचे से ऐतिहासिक लेबर चौराहे की मेंहदी अपने तय समय 9:35 पर उठाई गई। मेंहदी का जुलूस अपने कदीमी रास्तों को तय करते हुए वापस अपने मुकामी इमामबाड़े पर पहुँचा। मेंहदी का बोसा लेने एवं ज़ियारत के लिए बड़ी तादाद में अकीदतमंद इकट्ठा रहे। मेंहदी की अगुवाई । ताज़ियादार मो. शफीर (लकी अली), मुश्ताक अहमद काजमी, सलामत उल्लाह खान (पार्षद), अरुण कुमार सिंह, संदीप गुप्ता, जावेद अख्तर अन्सारी, काशान सिद्दीकी (पार्षद), एडवोकेट एजाज अहमद, शाकिब उस्मानी, जुम्मू खान, मो. अफसार, शोएब अन्सारी, मो. शादाब, रियाज खान, गुलामाने पंजतन एकता कमेटी के सभी सदस्य, एसीपी पुष्कर वर्मा एवं इंस्पेक्टर थाना करेली पुलिस दल-बल के साथ मौजूद रहे। कार्यकारी अध्यक्ष जावेद अख्तर अन्सारी और ताज़ियादार लकी अली ने आए हुए जायरीनों का खैर मकदम और इस्तेकबाल किया। जायरीनों ने बड़ी तादाद में शिरकत करके फातिहा-नियाज पढ़ी और मुल्क में अमन चैन व भाईचारे के लिए दुआएं मांगी। प्रशासन का पूरा सहयोग प्राप्त रहा।

कुम्भ से उठेगी हिन्दु राष्ट्र की आवाज- धनंजय सिंह

सबसे तेज प्रयागराज

प्रयागराज । अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद की प्रांतीय बैठक बिजलीपुर के शिव दरबार शनि देव धाम सिद्ध पीठ शनि देव मंदिर शिवरतन का पुरवा बिजलीपुर प्रयागराज परिसर मे सम्पन्न हुई। बैठक के मुख्य अतिथि अंतर्राष्ट्रीय हिन्दू परिषद के क्षेत्रीय महामंत्री पूर्वी उत्तर प्रदेश धनंजय सिंह एवं संजय दुबे जी संगठन मंत्री काशी प्रांत सुधीर शुक्ला प्रांत मंत्री राष्ट्रीय बजरंग दल काशी प्रांत रहे । धनंजय सिंह ने बताया की अतंर्राष्ट्रीय हिन्दु परिषद की ग्राम स्तर तक समिति की संरचना व गाँव गाँव हनुमान चालिसा केंद्र आगामी कुम्भ तक एक लाख हनुमान चालीसा केंद्र की स्थापना की अपेक्षा समस्त हिंदू समाज अपने अपने मंदिर पर मंगलवार को एकत्रित होकर करे। उन्होंने बताया की गुरु पूर्णिमा को हम सभी संतो का , मंदिर के पुजारियों को, कथाकार से, अपने शिक्षकों से मिल कर आशीर्वाद लें ।उन्होने बताया की आगामी कुम्भ में अंतर्राष्ट्रीय हिन्दू परिषद विश्व के पचास देशो के हिन्दुओ को इकट्ठा कर हिन्दु राष्ट्र की मांग की आवाज उठाई जाएगी कार्यक्रम में आए हुए सभी पदाधिकारी का संजय तिवारी जिलाध्यक्ष ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए आभार प्रकट किया।इस अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद के जिलाध्यक्ष गंगा पार प्रयागराज संजय तिवारी प्रदीप केसरवानी संरक्षक, शिव विशाल तिवारी जिला उपाध्यक्ष श्याम उपाध्याय, अधिवक्ता जिला अध्यक्ष मनोज यादव, जिला महामंत्री सुधांशु मिश्रा ब्लॉक अध्यक्ष कुलदीप तिवारी ब्लॉक महामंत्री राज तिवारी सुजीत पांडेय ,आनंद पांडे मुखिया, आशीष जायसवाल, यशराज मिश्रा अनुराग भट्ट विनय कुमार कृष्ण दत्त ओझाआदि सैकड़ो की संख्या में लोग मौजूद रहें ।

वहीं दूसरी तरफ शनि देव धाम मंदिर परिसर की दिव्यता भव्यता को लोग देखकर के बहुत ही आकर्षित हो रहे थे शनि देव धाम मंदिर परिसर पर आए हुए सभी पदाधिकारी ने हनुमान चालीसा का पाठ करते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

फूलपुर में निकाला कोहना से ऐतिहासिक दुलदुल का जुलूस

सबसे तेज प्रयागराज

फूलपुर। सातवीं मोहर्रम के दिन फूलपुर के कोहना हवेली से दुलदुल का ऐतिहासिक जुलूस निकाला जाता है। जिसमें नगर पंचायत की जानी-मानी हस्तियां शरीक होती हैं। यह वही दुलदुल घोड़ा है जिस पर कर्बला की जंग में हजरत इमाम हुसैन अ.स सवार होकर हक व बातिल की जंग लड़ने के लिए यजीदी फौजों से भिड़ गए थे। इस दौरान जंग इमाम हुसैन घोड़े पर ही शहीद कर दिए गए। उनका लाशा जब कर्बला की रेती पर गिरा तब इमाम का घोड़ा वापस खेमों की तरफ आया और हुसैनी घराने वालों को अश्कबार आंखों से यह संदेश दिया कि इमाम की शहादत हो चुकी है। यजीदी फौजों ने इमाम का सर मुबारक तन से अलग करके भाले की नोक पर पूरे मुल्क शाम में घुमाते हुए यजीदी दरबार में पेश हुए। इस दुल-दुल घोड़े को सजा कर सातवीं मोहर्रम को फूलपुर के हवेली से निकालकर विभिन्न मोहल्लो में घुमाते हुए देर रात वापसी होती है। मौके पर ताजिया कमेटी के अध्यक्ष सै. बलागत हुसैन, सै.जलालत हुसैन, नासिर अली, गुड्डू, अली शेर, सरफराज पत्रकार, मोहम्मद असीर, अब्दुल मेहदी अहमद रजा, मोहम्मद नजमुद्दीन मिस्टर, मोहम्मद लतीफ, मोहम्मद दानिश, मोहम्मद तनवीर, शाहनवाज आदि सैकड़ो लोगों ने जुलूस में खिदमत किया थाना फूलपुर से इंस्पेक्टर दीनदयाल सिंह व चौकी इंचार्ज आकाश सचान मय फोर्स जुलूस की सुरक्षा में लग रहे।

इफको नैनो उर्वरक किसानों के लिए अत्यंत लाभकारी

मौजी लाल रावत

सबसे तेज प्रयागराज

फूलपुर। मोतीलाल नेहरु फारमर्स ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट, कारडेट ,इफको , फूलपुर मे रविवार को इफको नैनो उर्वरक बीक्री केन्द्रो के सौ से अधिक विक्रेताओ का एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि इफको उ.प्र. के राज्य विपणन प्रबंधक अभिमन्यू राय ने सभी विक्रेताओ को इफको उत्पादों के गुणो को विस्तार पूर्वक जानकारियां देते कहा की इफको नैनो उर्वरक की गुणवत्ता को किसानों के साथ साझा करने की जरूरत है। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि आज सभी बिक्री केद्रों का यह कर्तव्य है कि किसानों के बीच रसायनिक उर्वरकों की बढ़ती लोकप्रियता को धीरे-धीरे कम किया जाए एवं बायो फर्टिलाइजर ,सागरिका तथा नैनो आधारित उर्वरकों का ज्यादा से ज्यादा किसानों के बीच में प्रचार किया जाए ताकि आने वाली पीढ़ी को हम स्वच्छ वातावरण , पीने का स्वच्छ पानी एवं अच्छी गुणवत्ता की जमीन के साथ ही स्वच्छ एवं गुणवत्तापूर्ण अन्न भी उपलब्ध हो सके । उन्होंने पीएम प्रणाम योजना के विषय में विस्तार से जानकारी भी दी । कारडेट प्रबंध समिति के सदस्य श्री आर.पी.सिंह बघेल ने अपने अनुभव साझा करते हुए नैनो उर्वरक की गुणवत्ता को विस्तार पूर्वक समझाया। कॉर्डेट फूलपुर के जैव उर्वरक इकाई के राजेश कुमार सिंह ने खेती में जैव उर्वरकों के प्रयोग के विषय में विस्तार से जानकारी दी। इसी क्रम में इफको एमसी के अरविंद द्विवेदी ने विभिन्न कीटनाशकों दवाओ सहित खरपतवार नाशियों के विषय में जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन इफको प्रयागराज के क्षेत्र प्रबंधक अक्षय कुमार पांडे ने किया इस मौके पर कार्यक्रम में कार्डेट फूलपुर के प्रधानाचार्य डॉक्टर हरिश्चंद्र, सुमित तेवतिया , एग्री जंक्शन कृषि केंद्र सांवडीह के प्रभारी धर्मेंद्र कुमार सिंह,अभिषेक कुमार पांडे ,अमित कुमार कुशवाहा मौजूद रहे।

हण्डिया पुलिस द्वारा शान्ति भंग करने की दृष्टिगत 15 व्यक्तियो का चालान किया

सबसे तेज प्रयागराज

प्रयागराज । पुलिस आयुक्त व अतिरिक्त पुलिस आयुक्त के निर्देशन में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में पुलिस उपायुक्त गंगानगर, व सहायक पुलिस आयुक्त हण्डिया के पर्यवेक्षण में तथा प्र०नि० हण्डिया बृजकिशोर गौतम के कुशल निर्देशन मे थाना हण्डिया पुलिस टीम द्वारा रविवार को शान्ति एवंम कानून व्यवस्था भंग करने के दृष्टिगत 15 व्यक्तियों के विरुद्ध निरोधात्मक कार्यवाही करते हुये चालान किया गया।

गिरफ्तार व्यक्ति का नाम व पता- सुनील मौर्या पुत्र स्वा) संकठा प्रसाद ग्राम चरीत,श्रवण मौर्या, अनिल कुमार मौर्या पुत्र स्व० संकठा प्रसाद ग्राम बरौत, राहुल कुमार शिल्पकार पुत्र स्व० हरीलाल निवासी ग्राम बेला थाना सरायममरेज. मुनीच चन्द्र यादव पुत्र स्वा) मोती लाल निवासी डिघरी बाना,शरद प्रसाद पुत्र जवाहर लाल यादव निवासी डिपरी, श्याम सुन्दर पुत्र जवाहर लाल यादव निवासी डिधरी घाना, जवाहर लाल पुत्र स्व० चंद्रिका प्रसाद निवासी ग्राम डीघरी बाना. अखिलेश कुमार पाल पुत्र पंधारी पाल निवासी ग्राम उपरदहा. मो0 अफसर पुत्र अख्तर अली निवासी ग्राम उधवपुर आमेपुर, मो० वारिश पुत्र अख्तर अली निवासी ग्राम उधवपुर आमेपुर. नागेन्द्र प्रसाद गौतम पुत्र फूलचन्द्र गौतम निवासी ग्राम धनुपुर. लाडले अनवर पुत्र प्रोफेसर अजीमुल्लाह निवासी वार्ड न0 13 यादव नगर कस्बा. राजेश कुमार पुत्र स्व० मिश्रीलाल ग्राम अंजना. धर्मेन्द्र कुमार पुत्र स्वा) लल्लू प्रसाद ग्राम अंजना थाना हंडिया जनपद प्रयागराज।

गिरफ्तार करने वाले पुलिस टीमः

प्रभारी निरीक्षक बृज किशोर गौतम थाना हण्डिया, अमित कुमार चौकी प्रभारी इममागंज, सौरभ पाण्डेय चौकी प्रभारी बरौत,उ0नि0 कन्हैया राम, उपनिरीक्षक राजेन्द्र प्रसाद, प्रशिए0नि० प्रदीप कुमार. प्रशि०3०नि० अजीत कुमार साहनी थाना हण्डिया कमिश्रेरट प्रयागराज।

फूलपुर में 5 फीडरो पर 6 दिन के लिए 6 घंटे बाधित रहेगी बिजली

सबसे तेज प्रयागराज

फूलपुर। विद्युत उपखंड कार्यालय फूलपुर के अनुसार 33/11 से संबंधित प्रतापपुर,मैलहन,बादशाहपुर,भोपतपुर और जलालपुर फीडर के 33 के बी ए मेन लाइन के रीकंडकटर तारो को बदलने का कार्य 15 जुलाई से 20 जुलाई तक प्रत्येक दिन 9 बजे से 3 बजे तक चलेगा उक्त समय पर विभागीय कार्य होने के कारण सिट डाउन रहेगा जिसके चलते 6 घंटे तक विद्युत बाधित रहेगी उक्त जानकारी उपखंड अधिकारी विद्युत फूलपुर प्रांजल मिश्रा ने एक विज्ञप्ति के अनुसार दी है उक्त अधिकारी ने बताया की विद्युत उपभोक्ता अपने जरूरत के अनुसार पानी आदि की व्यवस्था विद्युत आपूर्ति बाधित होने के पूर्व कर ले जिससे उन्हें किसी भी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

पत्नी की हत्या कर फरार पति समेत 8 ससुरालियों पर केस दर्ज

मुरादाबाद। महानगर के थाना कटघर क्षेत्र के सूरजनगर में शनिवार सुबह गला रेतकर पत्नी की हत्या करने के बाद शव का चारपाई पर फेंककर फरार हुए पति समेत 8 ससुरालियों पर थाना पुलिस ने दहेज हत्या का केस दर्ज कर लिया। पुलिस ने फारेंसिक टीम से जांच पड़ताल कराने के बाद पोस्टमार्टम कराके शव परिजनों को सौंप दिया।

थाना मूंढापांडे क्षेत्र के गांव निवासी रेशम रानी (30 वर्ष) पुत्री नौबत राम की शादी 28 जून 2020 को मूंढापांडे थाना क्षेत्र के ही गांव मनकरा मिलक निवासी नरेशपाल सिंह पुत्र हरपाल से हुई थी। उसके दो बच्चे तीन साल का बेटा देवांश और दो साल की बेटी माही है। नरेशपाल पेट्रोल पंप पर नौकरी करता है।

पड़ोसियों ने इस घटना की सूचना रेशम रानी के भाई जगपाल को दी। जगपाल के अनुसार वह लोग पहुंचे तो बहन रेशम का खून से लथपथ शव चारपाई पर पड़ा था। दोनों बच्चे पास ही खड़े रो रहे थे। सूचना पर सीओ कटघर आशीष कुमार सिंह, एसएचओ संजय कुमार पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे।

पुलिस ने धोखाधड़ी के मामले में 3 वांछित को किया गिरफ्तार

सबसे तेज प्रयागराज

बाराबंकी। एसपी दिनेश कुमार सिंह के निर्देश पर धोखाधड़ी के मामले में वांछित चल है तीन थानों की पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

थाना कुर्सी पुलिस टीम द्वारा वांछित अभियुक्त आयुष दीक्षित पुत्र स्व0 मनोज कुमार दीक्षित निवासी 86/220 देवनगर थाना रायपुरवा जनपद कानपुर को अनवारी अण्डरपास के पास से गिरफ्तार किया गया।

थाना सफदरगंज पुलिस टीम द्वारा धोखाधड़ी में वांछित अभियुक्त अब्दुल कलाम पुत्र मो0 हनीफ निवासी ग्राम रसौली थाना सफदरगंज को रसौली पुल के पास से गिरफ्तार किया गया।

थाना कोतवाली नगर पुलिस टीम द्वारा वांछित अभियुक्त सुशील कुमार पुत्र खुशीराम निवासी काजी बहटा थाना बड्डुपुर जनपद बाराबंकी को दुन्दपुरवा चौराहे के पास से गिरफ्तार किया गया।

लूट की घटना का 24 घण्टे के अन्दर खुलासा, 2 अभियुक्त गिरफ्तार, बाइक मोबाइल नगदी बरामद

सबसे तेज प्रयागराज

प्रयागराज। औद्योगिक क्षेत्र पुलिस ने लूट की घटना का 24 घंटे के अंदर खुलासा करते हुए गिरफ्तार करते हुए मोबाइल बाइक व नगदी बरामद करते हुए जेल भेज दिया।

थानाध्यक्ष औद्योगिक क्षेत्र महेश मिश्रा ने बताया कि लूट के आरोपियों की तलाश में चेकिंग किया जा रहा था इसी बीच मुखबिर की सूचना पर सरस्वती हाइटेक सिटी के पास से लूट के 2 अभियुक्त विशाल भारतीया पुत्र सुरेन्द्र भारतीया निवासी डभाँव थाना नैनी जनपद प्रयागराज एवं विकास भारतीया पुत्र रामा भारतीया निवासी ग्राम अलमापुर सहसों थाना झूसीं जनपद प्रयागराज को गिरफ्तार कर पांच मोबाइल फोन, तीन मोटरसाइकिल 1800 सौ रुपए नगदी बरामद करते हुए जेल भेज दिया।

पुलिस टीम का विवरण

उ0नि0 सुरेन्द्र प्रताप.उ0नि0 चन्द्रपाल सिंह.उ0नि0 राजूकृष्ण सिंह.उ0नि0 हरिओम सिंह.उ0नि0 जयसिंह नारायण यादव.उ0नि0 रजनेश शर्मा थाना औद्योगिक क्षेत्र कमिश्नरेट प्रयागराज ।

मूड को बेहतर बनाने से लेकर हार्ट को हेल्दी रखने तक, सेहत के लिए लाजवाब होती हैं केसर की छोटी-छोटी पत्तियां

केसर को औषधीय गुणों का खजाना यूं ही नहीं कहा जाता है। इसे खास मौकों पर बनने वाले पकवानों में कई लोग जगह देते हैं लेकिन क्या आप जानते हैं कि डेली डाइट में इसे शामिल करने से सेहत को कितने बेहतरीन फायदे (Saffron Health Benefits) मिल सकते हैं? बता दें कि इसकी पत्तियां न सिर्फ रंग और सुंदरता बल्कि सेहत के लिहाज से भी काफी गुणकारी होती है।

लाइफस्टाइल डेस्क, नई दिल्ली। ॠड्डद्यह्लद्ध क्रठ्ठद्गद्धद्बह्लह्य ह्द्ध स्ड्डद्बद्धह्यठ्ठ- एंटी-इंफ्लेमेटरी, एंटीऑक्सीडेंट और कई औषधीय गुणों से भरपूर केसर सेहत के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। डाइट में इसे शामिल करने से डाइजेशन तो बेहतर होता ही है, साथ ही नींद और डिप्रेशन से जुड़ी समस्याओं से भी काफी राहत मिल सकती है। इसे दूध या पानी ही नहीं, बल्कि खानपान में कई तरीकों से शामिल किया जा सकता है। आइए आपको बताते हैं कि हार्ट से लेकर त्वचा और आंखों तक के लिए केसर का सेवन कितना फायदेमंद साबित हो सकता है।

नींद को बनाए बेहतर

नींद से जुड़ी समस्याओं में केसर का सेवन काफी फायदेमंद साबित होता है। बता दें, कि इसमें एंटीडिप्रेसेंट क्वालिटी पाई जाती है, जो नींद को बेहतर बनाने के साथ-साथ डिप्रेशन जैसी समस्या में भी फायदा देती है। ऐसे में, रात को सोने से पहले आप केसर का दूध पी सकते हैं।

पाचन तंत्र के लिए फायदेमंद

जिन लोगों को अक्सर गैस और एसिडिटी की तकलीफ रहती है, उनके लिए केसर का इस्तेमाल काफी लाभदायक साबित होता है। जानकारी के लिए बता दें, कि यह कई खास औषधीय गुणों से भरपूर होती है, जिससे पाचन से जुड़ी दिक्कतें दूर रहती हैं। आप इसे खाने के साथ-साथ दूध में डालकर भी सेवन कर सकते हैं।

आंखों के लिए गुणकारी

आजकल कम उम्र में ही लोग कमजोर आंखों से जूझ रहे हैं। ऐसे में, अगर आप केसर को डाइट में शामिल करते हैं, तो इससे आंखों की जलन और खुजली ही नहीं, बल्कि आंखों की रोशनी बढ़ाने में भी मदद मिल सकती है। ऐसा, इसमें पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट गुणों के कारण होता है।

हार्ट को रखे हेल्दी

हार्ट को हेल्दी रखने में भी केसर बड़ी भूमिका निभाती है। बता दें, इसके सेवन से न सिर्फ बैड कोलेस्ट्रॉल में कमी आती है, बल्कि कुछ हद तक ब्लड प्रेशर को भी कंट्रोल किया जा सकता है।

मूड को बनाए बेहतर

केसर के सेवन से मूड को भी बेहतर बनाया जा सकता है। खासतौर से जब महिलाएं पीरियड्स के दिनों में होती हैं, तो ऐसे में इसका सेवन करने से मूड स्विंग्स, फूड क्रेविंग, थकान और कमजोरी से काफी राहत मिल सकती है।

भाजपा का मनुवादी चेहरा बेनकाब

सदियों से जारी दलितों का अपमान और उत्पीड़न आजादी के बाद भी कमोबेश जारी है। हालांकि संविधान और कानून के अधिकारों ने उन्हें सुरक्षा ज़रूर प्रदान की है, लेकिन समाज में जड़ें जमाए ब्राह्मणवादी सामंतवाद के अहंकार और दमन के आगे भूमिहीन, कमजोर, अशिक्षित दलित अपमानित होने और मरने-पिटने के लिए अभिशप्त है। हालांकि, आधुनिक शिक्षा व्यवस्था और आरक्षण के अधिकार से दलितों के भीतर एक छोटा सा मध्यवर्ग उभरा है। सामाजिक जागरूकता पैदा हुई है।कर्नाटक भाजपा के सात बार के सांसद और पूर्व केंद्रीय मंत्री रमेश जिगाजिनागी ने अपनी ही पार्टी पर दलित विरोधी होने का आरोप लगाया है। नरेंद्र मोदी के तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने के बाद पिछले दस साल से खामोश आवाजें अब मुखर होने लगी हैं। इसका एक कारण जाहिर तौर पर नरेंद्र मोदी की गठबंधन सरकार है। भाजपा के 240 सीटों पर सिमटने के बावजूद नरेंद्र मोदी अपनी सरकार बनाने में कामयाब हुए। लेकिन उनकी कैबिनेट में दलितों को कोई तवज्जो नहीं मिली। पिछली बार राज्यमंत्री रहे रमेश जिगाजिनागी को इस बार कैबिनेट मंत्री बनाए जाने की उम्मीद थी। उन्होंने अपने समर्थकों के जरिए यह आरोप लगाया है कि भाजपा दलित विरोधी पार्टी है। बीजेपी में सवर्णों का दबदबा है। सवर्णों को ही मंत्रिमंडल में शामिल किया गया। जाहिर तौर पर यह कोई नई बात नहीं है लेकिन भाजपा के ही एक वरिष्ठ दलित सांसद द्वारा लगाए गए आरोप के अपने मायने हैं।सदियों से जारी दलितों का अपमान और उत्पीड़न आजादी के बाद भी कमोबेश जारी है। हालांकि संविधान और कानून के अधिकारों ने उन्हें सुरक्षा ज़रूर प्रदान की है, लेकिन समाज में जड़ें जमाए ब्राह्मणवादी सामंतवाद के अहंकार और दमन के आगे भूमिहीन, कमजोर, अशिक्षित दलित अपमानित होने और मरने-पिटने के लिए अभिशप्त है। हालांकि, आधुनिक शिक्षा व्यवस्था और आरक्षण के अधिकार से दलितों के भीतर एक छोटा सा मध्यवर्ग उभरा है। सामाजिक जागरूकता पैदा हुई है। राजनीतिक चेतना के जरिए दलित अपना एजेंडा और प्रतिनिधित्व के अधिकार को समझने लगे हैं। लेकिन ब्राह्मणवादी ताकतें इस परिवर्तन को मिटाने के लिए सक्रिय रही हैं। भारत की समावेशी और सामाजिक न्याय की राजनीति के बरक्स आजादी के बाद ही हिंदुत्व की राजनीति शुरू हुई। आरएसएस इस राजनीति का संचालक और बौद्धिक केंद्र है। आरएसएस ने पहले श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में 1951 में भारतीय जनसंघ को खड़ा किया। जनसंघ के जरिए आरएसएस को पहली बार सत्ता में पहुंचने का मौका जनता पार्टी की सरकार (1978 - 1980) में मिला।जनता पार्टी की सरकार बिखरने के बाद जनसंघ अलग हो गया। 1980 में आरएसएस ने जनसंघ के स्थान पर भाजपा का गठन किया।

इसके बाद उसने दलितों को भाजपा के साथ जोड़ने के लिए 1983 में सामाजिक समरसता मंच बनाया। यह मंच दलितों का हिन्दुत्वीकरण करने की प्रयोगशाला बना। राम मंदिर आंदोलन में दलितों की भागीदारी ने आरएसएस बीजेपी को सत्ता में पहुंचने की उम्मीदों को पंख दे दिए। एक दलित कामेश्वर चौपाल से प्रतीकात्मक मंदिर की पहली ईंट रखवाई गई। दलितों के अतीत और स्मृतियों को मिटाने के लिए अनेक कुचक्र रचे गए।दलितों के मसीहा और संविधान निर्माता बाबा साहब अंबेडकर का परिनिर्वाण 6 दिसंबर 1956 को हुआ था। दलित समाज के लिए यह प्रेरणा का दिन है। इस दिन की स्मृतियों को मिटाने के लिए बहुत सोची-समझी रणनीति के तहत 1992 में बाबरी मस्जिद को तोड़ दिया गया। आरएसएस, बीजेपी, हिंदू महासभा और अन्य हिंदुत्ववादी संगठन 6 दिसंबर को शौर्य दिवस के रूप में मनाते हैं। दलितों की चेतना कुंद करके सत्ता हासिल करने के लिए दलितों का इस्तेमाल करना बीजेपी-आरएसएस की रणनीति है। सामाजिक न्याय को सामाजिक समरसता में बदल दिया गया। इसका लक्ष्य है, जाति व्यवस्था और असमानता बनाए रखते हुए मुसलमानों-ईसाइयों के खिलाफ हिंदू एकता स्थापित करना।बाबा साहेब अंबेडकर ने 25 दिसंबर 1927 को मनुस्मृति का दहन किया था। बाबा साहब का स्पष्ट मानना था कि जाति व्यवस्था और दलितों के दमन को धर्मग्रंथों के जरिए ईश्वरीय मान्यता प्रदान की गई है। इसलिए धर्मग्रंथों को विस्फोटक से उड़ा देना चाहिए। बीजेपी-आरएसएस का हिंदुत्व, दरअसल नया ब्राह्मणवाद है। धर्म, धर्मग्रंथ, मंदिर और ईश्वर की प्रतीकात्मक राजनीति के जरिए पुनः समाज में वर्ण-जाति व्यवस्था लागू करके सवर्ण वर्चस्ववाद को स्थापित करना ही हिंदुत्व का उद्देश्य है। इसलिए मनुस्मृति दहन दिवस की स्मृतियों को मिटाने के लिए अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती (25 दिसंबर) को बड़े पैमाने पर मनाया जाने लगा और इसे सुशासन दिवस की संज्ञा दी गई। नरेंद्र मोदी के सत्ता में आने के बाद खुलेआम मनुस्मृति का प्रचार होने लगा। प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के नाम पर शिक्षण संस्थाओं के पाठ्यक्रम में शामिल करने की लगातार कोशिशें हो रही हैं। पहले महाराष्ट्र सरकार द्वारा स्कूली शिक्षा में मनुस्मृति के श्लोक शामिल करने का प्रयास हुआ, अब दिल्ली विश्वविद्यालय की लॉ फैकल्टी द्वारा मनुस्मृति को पाठ्यक्रम में शामिल करने की जुगत की जा रही है। बाबा साहब ने मनुस्मृति को इसलिए जलाया था क्योंकि यह दलितों, पिछड़ों (शूद्रों) और स्त्रियों को दोयम दर्जे का मनुष्य मानती है। मनुस्मृति के अनुसार दलितों, शूद्रों और स्त्रियों को शिक्षा और संपत्ति अर्जित करने का अधिकार नहीं है।मनुस्मृति इन समुदायों को गुलाम बनाकर ब्राह्मणवादियों को शोषण का अधिकार देती है। दरअसल, मनुस्मृति संविधान और मनुष्यता विरोधी है। लेकिन हिन्दुत्ववादियों के लिए यह प्रातःस्मरणीय ग्रंथ है। मनुस्मृति, मनुवाद और मनुस्मृतिकार से आरएसएस ने अपना प्रेम कभी छुपाया भी नहीं। संविधान पारित होने (26 नंबर 1949) के तीन दिन बाद, 30 नवंबर 1949 को आरएसएस के मुखपत्र ऑर्गेनाइजर ने भारतीय संविधान की यह कहकर आलोचना की थी कि इसमें मनु की संहिताएं नहीं हैं। राम मंदिर आंदोलन का एक केंद्र जयपुर भी रहा है। इसी दौरान राजस्थान हाइकोर्ट के प्रांगण में मनु की प्रतिमा लगाई गई। राजस्थान उच्च न्यायालय अधिकारी एसोसिएशन के तत्कालीन अध्यक्ष पदम कुमार जैन के अनुरोध पर जस्टिस एमएम कासलिवाला ने सौंदर्यीकरण के नाम पर मनु की मूर्ति लगाने की मान्यता प्रदान की। महज 23 दिनों के भीतर जयपुर हाईकोर्ट के प्रांगण में 28 जून 1989 को मनु की मूर्ति स्थापित कर दी गई। इसका विरोध उसी दिन से शुरू हो गया था। इसके दबाव में 28 जुलाई 1989 को हाईकोर्ट की प्रशासनिक बैठक में मनु की मूर्ति को हटाने का फैसला लिया गया। लेकिन विश्व हिंदू परिषद ने इस फैसले के खिलाफ याचिका दायर कर दी। आज भी यह मूर्ति संविधान और न्यायपालिका को मुंह चिढ़ा रही है। अप्रत्यक्ष तौर पर आरएसएस बीजेपी इसके पीछे खड़े हुए हैं। जाहिर तौर पर मनु में आस्था रखने वाले कभी भी दलित हितैषी नहीं हो सकते।अटल-आडवाणी की भाजपा ने इस बात को समझ लिया था कि दलितों के समर्थन के बिना सत्ता नहीं हासिल की जा सकती। इसीलिए 2000 ई. में तेलंगाना से आने वाले आरएसएस से सम्बद्ध दलित नेता बंगारू लक्ष्मण को भाजपा का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया गया। लेकिन एक भ्रष्टाचार का मामला उजागर होने के बाद उन्हें साल भर के भीतर हटा दिया गया। भाजपा के दलित विरोधी होने का एक प्रमाण यह भी है कि आज तक भाजपा ने नीति निर्धारक और निर्णायक पद पर किसी मजबूत दलित नेता को स्थान नहीं दिया है। कुल मिलाकर 15 साल से ज्यादा भाजपा केंद्र की सत्ता में रही है। एक दर्जन से अधिक राज्यों में भाजपा की सरकारें रही हैं। लेकिन अब तक एक भी दलित मुख्यमंत्री नहीं बनाया गया। केंद्र सरकार में भी कोई मजबूत दलित चेहरा नहीं है। कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल मोदी की छाया बनकर दलितों को लुभाने के लिए एक मुखौटा भर हैं। इसी तरह पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को भी वोटबैंक की राजनीति के लिए इस्तेमाल किया गया। लेकिन दलितों के हित में ना तो कोई एजेंडा सामने आया और ना ही कोई नीति बनी। इसके उलट पिछले 10 साल के नरेंद्र मोदी के शासनकाल में दलितों पर हिंदुत्ववादियों द्वारा शारीरिक हमले किए गए। मूंछ काटने से लेकर पेशाब पिलाने, बलात्कार और हत्या करने जैसी जघन्य और अमानवीय घटनाएं अनवरत जारी हैं। दलित न्याय के लिए भटक रहे हैं। नरेंद्र मोदी ने सफाईकर्मियों के पैर धोकर उनके काम का महिमा मण्डन किया।लेकिन उनके बच्चों की शिक्षा, सरकारी नौकरी और आरक्षण को लगभग बेमानी बना दिया गया। इतना ही नहीं मोदी के संसदीय क्षेत्र बनारस में एक सफाईकर्मी गटर में मर जाता है, लेकिन उसके परिवार को कोई न्याय नहीं मिलता। हाथरस में गुड़िया वाल्मीकि का बलात्कार होता है। फिर उसकी मौत होती है। लेकिन उसके परिवार के लोग आज भी न्याय के लिए भटक रहे हैं। मोदी के गृहराज्य गुजरात में 100 से अधिक गांवों में आज भी दलित मंदिर में प्रवेश नहीं कर सकते। भाजपा के शासन में ब्राह्मणवाद की मजबूती का आलम यह है कि राष्ट्रपति रहते हुए रामनाथ कोविंद को पुरी और पुष्कर के मंदिरों में नहीं घुसने दिया गया लेकिन पुजारियों पर कोई कार्रवाई नहीं हुई।

संपादकीय

भरण-पोषण का हक

देश की शीर्ष अदालत ने महिला सशक्तीकरण की दिशा में नई पहल की है। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को स्पष्ट किया है कि मुस्लिम महिलाएं भी सीपीसी की धारा 125 के तहत भरण-पोषण की हकदार हैं। न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह ने इस सिद्धांत की व्याख्या की कि भरण-पोषण किसी तरह का दान नहीं बल्कि सभी विवाहित महिलाओं का मौलिक अधिकार है। अब चाहे महिला किसी भी धर्म की क्यों न हो। दरअसल, अदालत का फैसला तेलंगाना के मोहम्मद अब्दुल समद की अपील के जवाब में आया है। तेलंगाना उच्च न्यायालय ने भी इसी तरह का फैसला दिया था, जिसे शीर्ष अदालत ने बरकरार रखा। अब्दुल समद ने तेलंगाना उच्च न्यायालय के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी। उल्लेखनीय है कि याचिकाकर्ता ने दलील दी थी कि एक तलाकशुदा महिला केवल मुस्लिम महिला (तलाक पर अधिकार संरक्षण) अधिनियम 1986 के तहत ही भरण-पोषण की मांग कर सकती है। शीर्ष अदालत ने उसकी अपील को खारिज कर दिया। कोर्ट का मानना था कि धारा 125 देश की सभी महिलाओं पर लागू एक धर्मनिरपेक्ष प्रावधान है। उल्लेखनीय है कि यह फैसला ऐतिहासिक शाह बानो प्रकरण की याद ताजा करता है। इस मामले में शीर्ष अदालत ने धारा 125 के तहत एक तलाकशुदा मुस्लिम महिला के भरण-पोषण के अधिकार के पक्ष में फैसला सुनाया था। यह फैसला 1986 के उस अधिनियम के बावजूद था, जिसमें इस अधिकार को सीमित करने के प्रावधान किये गये थे। बहरहाल, अदालत का हालिया फैसला धारा 125 की स्थायी स्वीकार्यता को सिद्ध करता है। यह भारतीय न्यायतंत्र की खूबसूरती ही है कि अधिनियम के विकास और उसके बाद के न्यायिक उदाहरणों ने तलाकशुदा मुस्लिम महिलाओं के भरण-पोषण के अधिकारों का उत्तरोतर विस्तार ही किया है। निस्संदेह, शीर्ष अदालत का फैसला महिलाओं को उनके न्यायोचित अधिकार दिलाने तथा संरक्षण की दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण है।बहरहाल, अदालत ने इस फैसले के जरिये यह संदेश देने का प्रयास किया है कि जब हम 21वीं सदी में सर्वांगीण विकास व सभ्यता के समृद्ध होने का दावा करते हैं तो महिलाओं के अधिकारों को लेकर भी हमारी सोच प्रगतिशील होनी चाहिए। उनके प्रति संकीर्ण मानसिकता के चलते ही महिलाओं की स्थिति में अपेक्षित बदलाव नहीं हो पाया है। अदालत का नवीनतम निर्णय विकास क्रम के अनुरूप यह सुनिश्चित करता है कि देश में किसी भी धर्म की महिला अपने अधिकारों से वंचित न रहे। साथ ही यह भी कि विवाह विच्छेदन के बाद भी महिला को भरण-पोषण के लिये आर्थिक सहायता पाने का अधिकार है। निस्संदेह, अदालत ने भारत में लैंगिक न्याय और समानता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया है। यह फैसला न केवल संवैधानिक सिद्धांतों को कायम रखता है बल्कि मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा को भी मजबूत करता है। साथ ही यह फैसला भविष्य के मामलों के लिये भी एक मिसाल स्थापित करता है। इस फैसले का मानवीय पक्ष यह भी है कि यदि तलाकशुदा महिला का आय का कोई नियमित जरिया नहीं है तो भरण-पोषण के लिये आर्थिक मदद न मिल पाने से उसके जीवन-यापन का संकट बड़ा हो जाता है। विडंबना यह है कि भारत में मायके पक्ष के सक्षम होने के बावजूद तलाकशुदा बेटी को साथ रखने को अच्छी नजर से नहीं देखा जाता। जिससे तलाकशुदा बेटियों का जीवन-यापन दुष्कर हो जाता है। ऐसी महिलाओं के जीवन में यह फैसला एक नई रोशनी बनकर आया है। निस्संदेह, फैसला स्वागतयोग्य है और इसके दूरगामी गहरे निहितार्थ भी हैं। पिछली राजग सरकार के दौरान बने तीन तलाक कानून ने भी मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों को संरक्षण प्रदान किया था। यह फैसला देश की सोच में आए बदलाव का भी प्रतीक है। करीब चार दशक पहले शाह बानो केस में कोर्ट के ऐसे ही प्रगतिशील फैसले को तत्कालीन राजीव गांधी सरकार ने अपनी विधायी शक्ति से पलट दिया था। जिसके बाद देश में ध्रुवीकरण की राजनीति को बल मिला था। निस्संदेह, चार दशक बाद अब भारतीय समाज में लैंगिक समानता को लेकर सोच में व्यापक बदलाव आया है।

कम कीमत में अच्छे इलाज की अनूठी पहल

सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रम का त्रिस्तरीय ढांचा है। सबसे पहले ग्राम स्वास्थ्य कार्यकर्ता हैं, जिन्हें गांव में समुदाय द्वारा चुना जाता है। और जन स्वास्थ्य सहयोग के डॉक्टरों की टीम इन्हें प्रशिक्षित करती है। दूसरे स्तर पर उपस्वास्थ्य केन्द्र हैं, जहां वरिष्ठ कार्यकर्ता होते हैं और तीसरे स्तर पर गनियारी का अस्पताल है। जहां गंभीर व जटिल बीमारियों के लिए मरीजों को लाया जाता है। बिलासपुर जिले के कोटा-लोरमी क्षेत्र के 70 से भी अधिक गांवों में सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के जरिए बीमारियों का इलाज व उनकी रोकथाम की कोशिश की जाती है।किसी भी बीमारी को ठीक करने के लिए दवा और उपचार ही पर्याप्त नहीं है, उसकी रोकथाम और उससे बचाव भी जरूरी है। इसमें पौष्टिक भोजन, व्यायाम और नियमित दिनचर्या भी मददगार है। आज इस कॉलम में छत्तीसगढ़ के एक छोटे से कस्बे गनियारी में चल रही पहल के बारे में चर्चा करना चाहूंगा, जिससे हम स्वास्थ्य को समग्रता में समझ सकें।हाल ही मुझे यहां जाने और करीब से देखने का मौका मिला। हालांकि इससे पहले भी मैं कई बार यहां आया हूं। गनियारी छोटा कस्बा है, लेकिन अस्पताल के कारण इसकी ख्याति दूर-दूर तक फैल चुकी है। यहां इलाज कराने के लिए बहुत दूर से लोग आते हैं। कई लोग तो एक दिन पहले ही आ जाते हैं, जिससे अगले दिन जल्दी उनकी बारी आ जाए।बिलासपुर जिले के कस्बे गनियारी स्थित इस संस्था का नाम जनस्वास्थ्य सहयोग है। इसकी स्थापना वर्ष 1999 में हुई। संस्था की शुरूआत देश की मौजूदा ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं की हालत से चिंतित होकर दिल्ली के कुछ डॉक्टरों ने की थी। यह डॉक्टर जाने-माने दिल्ली के ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (एम्स) से निकले थे। यहां आने से पूर्व इन्होंने देशभर में घूमकर ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा किया था, जहां वे उनकी सेवाएं दे सकें। और अंततः देश के गरीब इलाकों में से एक छत्तीसगढ़ के एक कस्बे में उन्होंने काम प्रारंभ किया।यहां के डॉक्टर मानते हैं कि कुछ रोग कुपोषण से जुड़े हैं, इसलिए कुपोषण दूर करना जरूरी है। बीमारी को ठीक करने के लिए दवा और उपचार करना ही पर्याप्त नहीं है, उसकी रोकथाम करना भी जरूरी है। इसलिए पौष्टिक अनाजों की खेती के प्रचार-प्रसार पर ज़ोर दिया जाता है। यहां जंगली खाद्यों के महत्व को ग्रामीणों से साझा किया जाता है। छोटे बच्चों के कुपोषण दूर करने के लिए फुलवारी कार्यक्रम चलाया जा रहा है। टिकाऊ आजीविका के लिए स्वयं सहायता समूहों को आत्मनिर्भर बनाने पर ध्यान दिया गया हैइस केन्द्र की उपयोगिता का अंदाज इसी से लगाया जा सकता है कि वर्ष 2000 में बिना किसी औपचारिकता के बाह्य रोगी विभाग (ओपीडी) शुरू हुआ था और मात्र 3 माह के अंदर यहां प्रतिदिन आनेवाले मरीजों की संख्या 250 तक

पहुंच गई थी। अब ओपीडी में रोज करीब 300 मरीजों की जांच व इलाज होता है। यह सप्ताह में तीन दिन सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को होती है।यहां एक बड़ा अस्पताल है। बाल चिकित्सा देखभाल इकाई, नवजात गहन देखभाल इकाई, कीमोथैरेपी वार्ड, टीबी वार्ड, प्रसव वार्ड इत्यादि हैं। शल्य चिकित्सा कक्ष है। कुष्ठ रोग से लेकर टीबी, कैंसर का भी इलाज होता है। परिसर में रहने और भोजन की सुविधा उपलब्ध है। धर्मशाला भी है। सस्ते में खाने की थाली मिलती है। यह सुविधा मरीज के साथ उसके देखभालकर्ताओं को भी उपलब्ध है।सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रम का त्रिस्तरीय ढांचा है। सबसे पहले ग्राम स्वास्थ्य कार्यकर्ता हैं, जिन्हें गांव में समुदाय द्वारा चुना जाता है। और जन स्वास्थ्य सहयोग के डॉक्टरों की टीम इन्हें प्रशिक्षित करती है। दूसरे स्तर पर उपस्वास्थ्य केन्द्र हैं, जहां वरिष्ठ कार्यकर्ता होते हैं और तीसरे स्तर पर गनियारी का अस्पताल है। जहां गंभीर व जटिल बीमारियों के लिए मरीजों को लाया जाता है।बिलासपुर जिले के कोटा-लोरमी क्षेत्र के 70 से भी अधिक गांवों में सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के जरिए बीमारियों का इलाज व उनकी रोकथाम की कोशिश की जाती है। इस ग्रामीण सामुदायिक कार्यक्रम के तहत गांव की 70 महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण किया गया है। इनमें से अधिकांश महिलाएं बिना पढ़ी-लिखी या कम पढ़ी-लिखी हैं।स्वास्थ्य कार्यकर्ता के लिए योग्यता पढ़ाई-लिखाई नहीं, सेवा भावना होती है। कई सालों से इस कार्यक्रम को संचालित करने में ऐसी अनुभवी महिलाओं का योगदान है। यह कार्यकर्ता गंभीर मरीजों को खुद अस्पताल लेकर आती हैं, और इलाज करवाती हैं। इस कार्यक्रम का एक और महत्वपूर्ण हिस्सा है, तीन उपस्वास्थ्य केन्द्र जो सेमरिया, शिवतराई और बम्हनी में बनाए गए हैं।शिवतराई व बम्हनी, अचानकमार अभयारण्य के अंदर के गांव हैं। बम्हनी तक पहुंच मार्ग नहीं है। रास्ते में मनियारी नदी है, जिसमें बारिश के दिनों में बाढ़ होती है।यहां कार्यकर्ताओं के अलावा नर्सिंग स्टॉफ होता है और सप्ताह में निर्धारित दिन क्लिनिक भी होता है, जिसमें पुराने व नए मरीजों का इलाज किया जाता है। यहां खून जांच, वजन इत्यादि लेने की भी सुविधा होती है। इसके अलावा, दाई प्रशिक्षण, गर्भवती महिलाओं की जांच के लिए जागरूकता शिविर लगाए जाते हैं।इस कार्यक्रम का एक हिस्सा उपयुक्त टेक्नालॉजी का विकास भी है। इसके तहत स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए सरल-सहज तकनीक से ऐसे यंत्र तैयार किए जा रहे हैं, जो बीमारी की जांच और रोकथाम में मददगार हों।इसी प्रकार, यहां ब्लड प्रेशर चैक करने की मशीन विकसित की गई है। प्रदूषित पानी की जांच की जा सकती है। यह एक सरल विधि है, जिसके माध्यम से कोई भी व्यक्ति गांव के हैंडपंप के पानी की भी जांच कर सकता है। ओ.आर.एस. के पैकेट, प्रसूति किट, बच्चों के पोषण आहार तैयार किए जाते हैं। यहां साबुन बनाया जाता है और आयुर्वेदिक दवाएं तैयार की जाती हैं।6 माह से 3 वर्ष तक के बच्चों के लिए फुलवारी (झूलाघर) कार्यक्रम चलाया जा रहा है। यह झूलाघर की तरह होता है, जिसमें बच्चों को खाना भी खिलाया जाता है। इसमें एक महत्वपूर्ण पहलू है कि जिन माता-पिता के बच्चे फुलवारी में जाते हैं, वे अपना दैनंदिन काम तो आराम से कर ही सकते हैं। साथ ही मजदूर अभिभावक भी अपना काम कर सकते हैं, जिससे उनकी आजीविका पर कोई प्रतिकूल असर न पड़े।

जन स्वास्थ्य सहयोग ने छत्तीसगढ़ में कोदो, कुटकी, मड़िया, सांवा, कांगनी जैसे पौष्टिक अनाजों की खेती को बढ़ावा देने के लिए खेती कार्यक्रम चलाया जा रहा है। जन स्वास्थ्य सहयोग के परिसर में इसकी खेती होती है, और देसी बीज तैयार करके गांवों में किसानों को वितरित किए जाते हैं।यहां देसी बीज बैंक भी है, जिसमें 400 प्रजाति का देसी धान है। यहां से लगभग 400 किसानों को बीज वितरित किए गए हैं। बिना रासायनिक खेती की यह पहल पूरी तरह देसी बीजों पर आधारित है। पौष्टिक अनाजों को भोजन में शामिल में करने से कुछ बीमारियों की रोकथाम व बचाव भी होता है। क्योंकि इनमें रेशा (फाइबर) की मात्रा होती है। आजकल डॉक्टर भी पौष्टिक अनाजों को भोजन में शामिल करने की सलाह देते हैं।जन स्वास्थ्य सहयोग के डॉ. पंकज तिवारी बताते हैं कि यहां न तो गैरजरूरी जांच की जाती है और न ही अनावश्यक दवाएं दी जाती हैं। यह कोशिश होती है कि एक ही दिन में रोगी की जांच, दवा और इलाज का काम पूरा हो जाए। अब इस कार्यक्रम का विस्तार हुआ है। पांच वर्ष पहले से मध्यप्रदेश के डिंडौरी, अनूपपुर और शहडोल में चल रहा है। वे आगे कहते हैं कि हमारे काम की सीमाएं हैं, सार्वजनिक स्वास्थ्य का काम तो सरकार की जिम्मेदारी है, इसलिए हमने उनके साथ मिलकर काम करना शुरू किया है।कुल मिलाकर, यहां सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रम, ग्रामीण जांच प्रयोगशाला, ब्लड बैंक, आयुर्वेदिक दवा निर्माण, कृषि व पशु स्वास्थ्य सुधार के लिए काम किया जा रहा है। गरीबों के लिए कम कीमत पर बेहतर इलाज किया जाता है। रोगों की रोकथाम के लिए निरंतर प्रयास किया जाता है

।यानी हमें स्वास्थ्य को समग्रता में समझना होगा। इसके लिए हमें भोजन, व्यायाम, नियमित दिनचर्या इत्यादि कई चीजों का ख्याल रखना होगा। तभी हम हमारी सेहत को ठीक रख सकेंगे। अगर हम जैविक व प्राकृतिक खेती को अपनाएंगे तो हमें पौष्टिक भोजन तो मिलेगा ही, अच्छे पर्यावरण की दिशा में भी आगे बढ़ सकेंगे। लेकिन क्या हम दिशा में आगे बढ़ने के लिए सचमुच तैयार हैं?

डेढ़ महीने में दूसरी बार देश की जनता ने भाजपा को कड़ा संदेश दिया-पवन खेड़ा

एजेंसी

नई दिल्ली। सात राज्यों की 13 विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनाव में इंडिया गठबंधन के शानदार प्रदर्शन पर कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने कहा, 'उपचुनाव के नतीजे आपके सामने हैं... 13 सीटों पर हुए ये उपचुनाव बहुत महत्वपूर्ण हैं। डेढ़ महीने में दूसरी बार देश की जनता ने भाजपा को कड़ा संदेश दिया है। लोकसभा चुनाव में संदेश बहुत साफ था... उत्तराखंड में हमने अपनी दोनों सीटें बद्रीनाथ और मैंगलोर जीतीं। हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस ने 3 में से 2 सीटें जीतीं... और अगर कुल 13 सीटों का आकलन करें तो भाजपा को सिर्फ 2 सीटें मिलीं। मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, बिहार समेत कुल 7 राज्यों की 13 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव के परिणाम जारी हो गए है। सात राज्यों की 13 विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनाव में इंडिया गठबंधन ने शानदार प्रदर्शन किया है.13 में 11 सीटों पर INDIA ने जीत दर्ज की है जबकि जबकि दो सीट (हिमाचल की हमीरपुर और मध्य प्रदेश की अमरवाड़ा) बीजेपी के खाते में गई है। वहीं, बिहार की रुपौली सीट पर आरजेडी की बीमा भारती को करारी हार मिली है।13 विधानसभा सीटों में से कांग्रेस ने 4 सीटें जीतीं। TMC ने 4 सीटें जीतीं और पंजाब में,कने जालंधर पश्चिम सीट जीती। BJP ने दो सीटें जीतीं, DMK ने 1 सीट पर जीती है और बिहार की रूपौली सीट पर निर्दलीय उम्मीदवार शंकर सिंह ने जीत दर्ज की है।

संविधान हत्या दिवस को लेकर प्रियंका का सरकार पर हमला

नई दिल्ली। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने 1975 में आपातकाल लगाने की तिथि 25 जून को 'संविधान हत्या दिवस' के रूप में मनाने के सरकार के फैसले पर आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा कि जिन्होंने बार-बार संविधान पर प्रहार किया है वे नकारात्मक सोच के साथ 'संविधान हत्या दिवस' मना रहे हैं। उन्होंने कहा कि जिन्होंने कभी संविधान को नहीं माना, संविधान लागू करने का विरोध किया, इसका कभी सम्मान नहीं किया और संविधान खत्म करने का आव्हान करते रहे हैं लेकिन अब वही लोग 'संविधान हत्या दिवस मनाने' जा रहे हैं। श्रीमती वाड्रा ने कहा 'भारत की महान जनता ने ऐतिहासिक लड़ाई लड़कर अपनी आजादी और अपना संविधान हासिल किया है। जिन्होंने संविधान को बनाया, जिनकी संविधान में आस्था है, वे ही संविधान की रक्षा करेंगे।' उन्होंने कहा 'जिन्होंने संविधान लागू होने का विरोध किया, संविधान की समीक्षा करने के लिए आयोग बनाया, संविधान खत्म करने का आह्वान किया, अपने फैसलों और कृत्यों से बार-बार संविधान और लोकतंत्र की आत्मा पर प्रहार किया, वे नकारात्मक राजनीति वाला 'संविधान हत्या दिवस' मनाएंगे ही, इसमें आश्चर्य कैसा।'

शहीद अंशुमान की विधवा पर अश्लील टिप्पणी, दिल्ली पुलिस ने दर्ज की प्राथमिकी

नई दिल्ली। शहीद कैप्टन अंशुमान सिंह की पत्नी स्मृति पर अभद्र टिप्पणी करने वाले पर दिल्ली पुलिस ने एफआईआर दर्ज की है। इस बात की जानकारी अधिकारियों ने खुद दी है। अधिकारियों ने कहा कि दिल्ली पुलिस स्पेशल सेल की आईएफएसओ यूनिट ने कीर्ति चक्र कैप्टन अंशुमान सिंह की विधवा पर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर की गई कथित अभद्र टिप्पणी को लेकर एफआईआर दर्ज की है। बता दें कि एनसीडब्ल्यू (राष्ट्रीय महिला आयोग) ने हाल ही में इस मामले

पर स्वतः संज्ञान लिया है और मामले के संबंध में दिल्ली पुलिस के समक्ष शिकायत दर्ज की है। एक अधिकारी ने कहा कि एफआईआर बीएनएस अधिनियम और आईटी अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत आईएफएसओ (इंटेलिजेंस फ्यूजन एंड स्ट्रैटेजिक ऑपरेशंस) इकाई में दर्ज की गई है। पुलिस ने आगे जानकारी देते हुए कहा कि कि कथित तौर पर टिप्पणी करने वाले सोशल मीडिया हैंडल के बारे में विवरण मांगने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को बकायदा पत्र लिखा गया है।

विधानसभा उपचुनाव में भाजपा की हार मोदी-शाह की गिरती साख का प्रमाण: खड़गे

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने शनिवार को विधानसभा उपचुनाव में पार्टी की जीत को सकारात्मक राजनीति का परिणाम बताया और कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की यह हार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह की राजनीतिक साख में आ रही गिरावट का परिणाम है। श्री खड़गे ने कहा, 'विधानसभा उपचुनाव के सकारात्मक परिणाम के लिए हम जनता के सामने नतमस्तक हैं। उन्होंने जहाँ-जहाँ कांग्रेस के उम्मीदवारों के लिए वोट किया इसके लिए उनका तहेदिल से धन्यवाद और आभार।' उन्होंने कहा, 'विपरीत परिस्थितियों में सभी कांग्रेस कार्यकर्ताओं की मेहनत और प्रयासों के लिए उनका अभिवादन करते हैं। ये जीत दर्शाती है कि जनता ने भाजपा के अहंकार, कुशासन और नकारात्मक राजनीति को अब सिरे से नकार दिया है। यह मोदी-शाह की गिरती राजनीतिक साख का भी प्रबल प्रमाण है।

जम्मू कश्मीर से संबंधित अधिसूचना पुनर्गठन अधिनियम में संशोधन नहीं

एजेंसी

नई दिल्ली। केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने स्पष्ट किया कि केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर के बारे में जारी अधिसूचना में सरकार के कामकाज के नियमों में संशोधन किया गया है और यह अधिसूचना जम्मू और कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम, 2019 में संशोधन नहीं है जैसा कि कुछ मीडिया रिपोर्टों में कहा गया है। सूत्रों ने कहा है कि यह अधिसूचना प्रशासन के कामकाज के नियमों में एक साधारण संशोधन है जो किसी भी संदेह की स्थिति से बचने के लिए जारी की गयी है। उन्होंने कहा कि कुछ मीडिया रिपोर्टों में इस अधिसूचना को पुनर्गठन अधिनियम में संशोधन के रूप में गलत तरीके से रिपोर्ट किया है।

सूत्रों के अनुसार यह अधिसूचना किसी भी तरह से जम्मू और कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम, 2019 में निहित शक्तियों के संतुलन को नहीं बदलती है। उक्त अधिनियम अगस्त, 2019 में संसद द्वारा पारित किया गया है और इसे सर्वोच्च

न्यायालय द्वारा बरकरार रखा गया है। अधिनियम की धारा 32 के अनुसार राज्य की विधानसभा 'पुलिस' और 'कानून व्यवस्था' या भारत के संविधान की सातवीं अनुसूची में समवर्ती सूची को छोड़कर ,राज्य सूची में सूचीबद्ध किसी भी विषय के संबंध में कानून बना सकती है।

उन्होंने कहा कि अधिनियम की धारा 53 के अनुसार, उपराज्यपाल, विधानसभा को प्रदत्त शक्तियों के दायरे से बाहर आने वाले ऐसे किसी भी मामले में अपने विवेक से कार्य करेंगे जो अखिल भारतीय सेवाओं तथा भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो से संबंधित और कोई अन्य मामला जिसके लिए उन्हें किसी कानून के तहत अपने विवेक से कार्य करने की आवश्यकता है। सूत्रों ने कहा कि विधानसभा की शक्तियों और उपराज्यपाल के कार्यों के लिए उपर्युक्त प्रावधानों को ध्यान में रखते हुए अधिनियम में स्पष्ट रूप से परिभाषित और चित्रित किया गया है और इसे प्रशासनिक कामकाज के नियमों अथवा 'ट्रांज़ेक्शन ऑफ बिज़नेस' के नियमों में दर्शाया गया है। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रपति ने 27 अगस्त 2020 को अधिनियम की धारा 55 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रशासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर सरकार नियम, 2019 जारी किये थे। मौजूदा अधिसूचना प्रक्रियाओं पर बेहतर स्पष्टता प्रदान करने के लिए है ताकि केंद्रशासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर के प्रशासनिक कामकाज को सुचारू रूप से चलाया जा सके। मीडिया रिपोर्टों में कहा गया है कि इस अधिसूचना के माध्यम से गृह मंत्रालय ने जम्मू-कश्मीर के उप राज्यपाल के अधिकार बढा दिये हैं।

जम्मू-कश्मीर एलजी की शक्तियों में इजाफा संविधान व जनता के साथ मजाक : कांग्रेस प्रवक्ता रवींद्र शर्मा

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल की शक्तियों का दायरा बढ़ा दिया है। इसे लेकर सियासत तेज हो चली है।केंद्र सरकार के इस फैसले पर कांग्रेस के प्रमुख प्रवक्ता रवींद्र शर्मा ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव का ऐलान जल्द होने वाला है। ऐसे में अब एलजी की शक्तियों में इजाफा किया गया है। मुख्यमंत्री एक रबर स्टांप तरह काम करेगा। जनता की ओर से चुनी हुई सरकार के पास कोई शक्ति नहीं होगी और वो किसी अधिकारी के खिलाफ एक्शन नहीं ले पाएंगे।

उन्होंने कहा कि नौकरशाही के तबादले का अधिकार एलजी के पास होगा। मुख्यमंत्री या मंत्रिपरिषद के पास कोई शक्ति नहीं होगी, लेकिन चुनी हुई सरकार जनता के प्रति जवाबदेह होगी। उपराज्यपाल की शक्तियों का दायरा बढ़ाकर केंद्र सरकार ने संविधान और जनता के साथ मजाक किया है। यह किस तरह का लोकतंत्र है, भाजपा को बताना चाहिए। उन्होंने कहा कि ये राष्ट्रपति शासन का दूसरा रूप है। अब असली शासक उपराज्यपाल को बनाकर संविधान के साथ भद्दा मजाक किया गया है। संविधान की दुहाई देने वाले लोगों को अपने गिरेबान में झांकना चाहिए। हम इस कदम का विरोध करते हैं। गृह मंत्रालय ने जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम 2019 में संशोधन किया है। इसमें राज्य के उपराज्यपाल की शक्तियां बढ़ दी गई हैं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम, 2019 की धारा 55 के तहत इन बदलावों को मंजूरी दे दी है। इसमें उपराज्यपाल की शक्तियों को बढ़ाने वाली नई धाराएं शामिल हैं। इस संबंध में केंद्रीय गृह मंत्रालय की ओर से अधिसूचना जारी कर दी गई है। अखिल भारतीय सेवाओं, सार्वजनिक व्यवस्था, पुलिस व्यवस्था, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो, वित्त विभाग मामलों में एलजी को अधिक अधिकार दिया गया है।

साइबर अपराध पीड़ितों के लिए कानूनी सहायता की तत्काल आवश्यकता: धनखड़

एजेंसी

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने साइबर अपराध पीड़ितों के लिए कानूनी सहायता की तत्काल आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा है कि भारत दुनिया के सबसे बड़े डिजिटल समाज में से एक है।

श्री धनखड़ ने यहां वैश्विक आतंकवाद प्रतिरोधक परिषद (जीसीटीसी) के तीसरे साइबर सुरक्षा सम्मेलन के समापन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि साइबर अपराध पीड़ितों, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, कानूनी सहायता प्रदान करने की आवश्यकता है। देश में डिजिटल पहुंच बढ़ने के साथ-साथ साइबर अपराध की घटनाओं में वृद्धि पर उन्होंने कहा कि यह एजेंसियों, जांचकर्ताओं, नियामकों और विधि समुदाय के लिए चिंता का क्षेत्र है, और इससे निपटने के लिए तकनीकी और मानवीय विशेषज्ञता विकसित की जानी चाहिए।

उन्होंने कहा कि निर्दोष लोगों को धोखेबाज तत्वों ठग रहे हैं। उन्होंने कहा कि साइबर खतरों के संबंध में आम जनता को जागरूक किया जाना चाहिए। उपराष्ट्रपति ने कहा कि वैश्विक स्तर पर सबसे बड़े डिजिटल समाज में से एक के रूप में भारत की प्रमुख स्थिति है। उन्होंने

कहा कि वर्ष 2023 तक वैश्विक डिजिटल लेन-देन में देश की हिस्सेदारी 50 प्रतिशत होगी।प्रौद्योगिकी की पहुंच सुनिश्चित करने में भारत की उपलब्धियों की प्रशंसा करते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि आज दुनिया भारत में सेवा वितरण में प्रौद्योगिकी के बड़े पैमाने पर उपयोग को देखकर दंग है। प्रौद्योगिकी आम आदमी के बीच एक प्रचलित शब्द बन रही है। श्री धनखड़ ने कहा कि विघटनकारी प्रौद्योगिकियों का न केवल अर्थव्यवस्था, व्यवसाय या व्यक्तिगत उत्पादकता पर बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा पर भी प्रभाव पड़ सकता है। उन्होंने इन उभरती प्रौद्योगिकियों से उत्पन्न चुनौतियों को अवसरों में बदलने पर जोर दिया ।

सुरक्षा परिदृश्य का उल्लेख करते हुए श्री धनखड़ ने कहा कि युद्ध पारंपरिक सीमाओं को पार कर गया है और भूमि, अंतरिक्ष और समुद्र से आगे बढ़कर नए तकनीकी क्षेत्रों में फैल गया है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि उन्नत प्रौद्योगिकियों के संदर्भ में किसी राष्ट्र की तैयारी उसकी वैश्विक क्षमता और रणनीतिक ताकत को परिभाषित करने में महत्वपूर्ण होगी।'सॉफ्ट डिप्लोमैटिक पावर' किसी राष्ट्र की तकनीकी क्षमता पर निर्भर करती है।

झारखंड सीएम हेमंत सोरेन ने पत्नी कल्पना सोरेन के साथ की सुनीता केजरीवाल से मुलाकात

एजेंसी

नई दिल्ली। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन अपनी पत्नी कल्पना सोरेन के साथ दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के घर पहुंचे और उनकी पत्नी सुनीता केजरीवाल के साथ मुलाकात की। इससे पहले उन्होंने कांग्रेस नेता सोनिया गांधी के साथ भी मुलाकात की थी। जेल से बाहर आने के बाद उनकी यह पहली मुलाकात थी।

दरअसल हेमंत सोरेन को ईडी ने जमीन घोटाला मामले में 31 जनवरी को पूछताछ के बाद गिरफ्तार कर लिया था। इसके बाद उन्होंने ईडी की हिरासत में रात साढ़े आठ बजे राजभवन पहुंचकर सीएम पद से इस्तीफा दिया था। 1 फरवरी को उन्हें न्यायिक हिरासत में बिरसा मुंडा सेंट्रल जेल भेजा गया था। बाद में, झारखंड हाई कोर्ट से जमानत मिलने के बाद 28 जून को उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया। उसके बाद उन्होंने फिर से सीएम पद की शपथ ली। आम आदमी पार्टी की तरफ से यह कहा जा रहा है कि अरविंद केजरीवाल का वजन लगातार कम हो रहा है और उनकी शुगर की परेशानी भी बढ़ती जा रही है। उनकी तबीयत के बारे में जानने

और उनकी पत्नी को मिलने के लिए झारखंड के मुख्यमंत्री अपनी पत्नी के साथ उनके आवास पर पहुंचे जहां सुनीता केजरीवाल ने दोनों का स्वागत किया।

इस मुलाकात के बारे में आम आदमी पार्टी ने भी सोशल मीडिया के जरिए एक पोस्टर जारी किया है जिसमें इस मुलाकात का वीडियो लगाया गया है और लिखा गया है कि तानाशाही के खिलाफ एकजुट है इंडिया। हेमंत सोरेन ने दिल्ली दौरे पर कहा था कि बीजेपी ने न्यायपालिका को अपमानित किया है। मुझे उम्मीद है कि अरविंद केजरीवाल को जल्द जमानत मिल जाएगी।

बता दें कि सीएम केजरीवाल को ईडी के मामले में सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिल गई है लेकिन सीबीआई के मामले में जमानत न मिलने पर वह अभी जेल में हैं।

जम्मू कश्मीर में 'परिवारवादी दलों को रोकना भाजपा का लक्ष्य'

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) जम्मू कश्मीर के आगामी विधानसभा चुनावों में यदि सरकार बनाने की स्थिति में नहीं आती है तो ऐसे में उसकी कोशिश होगी कि किसी भी तरह से परिवारवादी पार्टियों के नेताओं को सत्ता में नहीं आने दिया जाये। पार्टी के केन्द्रीय नेतृत्व का कहना है कि जम्मू कश्मीर में विधानसभा चुनाव सितंबर 2024 में कराये जाने के हिसाब से सांगठनिक तैयारी है। बीते लोकसभा चुनावों में उसने जिन दो लोकसभा सीटों पर जीत दर्ज की है, उसके हिसाब से उसे 29 विधानसभा क्षेत्रों में बढ़त हासिल हुई थी। भाजपा का लक्ष्य है कि वह अपने दम पर किसी तरह से 35 से अधिक सीटें जीत जायें तथा कश्मीर घाटी में वह कुछ छोटे-छोटे दलों से गठबंधन करके परिवारवादी - नेशनल कॉन्फ्रेंस और पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी का नेतृत्व करने वाले परिवारों को सत्ता में आने से रोकें। भाजपा को लगता है कि लोकसभा चुनावों के हिसाब से देखा जाये तो घाटी में भाजपा को कोई वोट नहीं देगा और तो वह छोटे प्रभावशाली दलों से गठबंधन करना ठीक रहेगा हालांकि लोकसभा चुनावों में उसकी सहयोगी पार्टी जम्मू कश्मीर पीपुल्स पार्टी को केवल एक या दो विधानसभा सीटों पर ही बढ़त मिली थी। भाजपा के कुछ पुराने एवं स्थानीय नेताओं को लगता है कि भाजपा के नेतृत्व ने कश्मीर घाटी को बीते पांच साल में जिस गंभीरता से लेना चाहिए था, वैसा नहीं हुआ।भाजपा इन दिनों एक और सवाल से परेशान है कि क्या जम्मू कश्मीर में बदलते हालात में विधानसभा चुनाव कराने चाहिये कि नहीं। इस पर भाजपा में इस केन्द्र शासित प्रदेश के प्रभारी महासचिव तरुण चुघ का कहना है कि हालात तो स्थायी नहीं होते हैं, लेकिन हमें पार्टी के हित से अधिक देश का हित देखना है और इसलिए हमें चुनाव कराना ही होगा। उन्होंने कहा कि भाजपा को लोकसभा चुनावों में 90 में से 29 सीटों पर बढ़त हासिल हुई थी। विधानसभा चुनावों में हमें इसे 35 से 40 तक लेकर जाना है और उन परिवारवादी पार्टियों को रोकना है जिन्होंने संविधान के अनुच्छेद 370 एवं 35 ए की आड़ में जम्मू कश्मीर को अपने राजनीतिक स्वार्थों के लिए हिंसा एवं अलगाववाद को परोक्ष रूप में सींचा और पालापोसा है। भाजपा के सूत्रों का कहना है कि पार्टी की कोशिश होगी कि यदि उसका मुख्यमंत्री नहीं आता है तो कम से कम विधानसभा अध्यक्ष भाजपा का होना चाहिए। ताकि विधानसभा में कोई ऐसी गतिविधि को अनुमति मिले जो भारत की अखंडता को नुकसान पहुंचा सकती हो। जम्मू कश्मीर विधानसभा की नौ सीटों को गुज्जर, बक्करवाल आदि अनुसूचित जनजातियों एवं अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षित किया गया है, भाजपा नेतृत्व इन वर्गों के लोगों के बीच अपनी स्वीकार्यता बढ़ाने और इसके लिए विपक्ष द्वारा चलाये गये दुष्प्रचार अभियान को रोकने का प्रयास कर रहा है।

सनरूफ खोलकर रील बना रहे थे युवक, कैब चालक उनका वीडियो शूट करने लगा तो कर दी डंडों से पिटाई

इंदिरापुरम। इंदिरापुरम कोतवाली क्षेत्र के सीआईएसएफ रोड पर रात सनरूफ खोलकर रील बना रहे युवकों की मोबाइल में वीडियो शूट करना एक कैब ड्राइवर अभय चौहान को भारी पड़ गया। आरोप है कि कार सवार युवकों ने कैब चालक अभय को ओवरटेक रोक लिया। उसके बाद चालक को गाड़ी से बाहर खींचकर लाठी-डंडों से हमला कर दिया। इस दौरान चालक के सिर में डंडा लगने से खून बहने लगा। इतना ही नहीं आरोपियों ने कैब के शीशे डंडे से फोड़ दिए।

उपचुनाव में 'इंडिया' ब्लॉक को मिली जीत पर बोले राहुल गांधी, भाजपा का भय और भ्रम का जाल टूट गया

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने लोकसभा चुनाव के महज डेढ़ महीने बाद सात राज्यों की 13 विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनाव में शानदार जीत पर 'इंडिया' ब्लॉक को बधाई दी। राहुल गांधी ने एक्स पर लिखा, 'सात राज्यों में हुए उपचुनाव के नतीजों ने स्पष्ट कर दिया है कि भाजपा द्वारा बुना गया 'भय और भ्रम' का जाल टूट चुका है। किसान, नौजवान, मजदूर, व्यापारी और नौकरीपेशा समेत हर वर्ग तानाशाही का समूल नाश कर न्याय का राज स्थापित करना चाहता है। अपने जीवन की बेहतरी और संविधान की रक्षा के लिए जनता अब पूरी तरह से 'इंडिया' के साथ खड़ी है। जय हिंदुस्तान, जय संविधान।'

कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने भी एक्स हैंडल पर लिखा, 'विपरीत परिस्थितियों में सभी कांग्रेस कार्यकर्ताओं की मेहनत और प्रयासों के लिए हम उनका अभिवादन करते हैं। उपचुनाव में मिली यह जीत दर्शाती है कि जनता ने भाजपा की अहंकार, कुशासन और नकारात्मक राजनीति को अब सिरे से नकार दिया है। कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाड्रा ने भी 'इंडिया' ब्लॉक को बधाई देते हुए एक्स पर लिखा, 'सात राज्यों की 13 सीटों पर हुए उपचुनाव में देश की जनता ने अपना समर्थन इंडिया

गठबंधन को दिया है। देवभूमि हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड की जनता ने कांग्रेस पर भरोसा जताया है। कांग्रेस और इंडिया गठबंधन के सभी जीते हुए प्रत्याशियों को बहुत-बहुत बधाई।' बता दें कि लोकसभा चुनाव के बाद पूरे देश की निगाहें 13 विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनावों के नतीजों पर टिकी थी। 'इंडिया' ब्लॉक ने इस उपचुनाव में शानदार प्रदर्शन करके भाजपा को आत्ममंथन करने के लिए बाध्य कर दिया है। उपचुनाव में भाजपा 13 में से महज दो सीटों पर ही जीत दर्ज कर सकी। बिहार की एक सीट पर निर्दलीय ने बाजी मारी है। इसके अलावा, कांग्रेस ने उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी राज्यों में कमाल का प्रदर्शन कर दो-दो सीटें जीती हैं। उधर, मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस ने भी पश्चिम बंगाल में प्रशंसनीय प्रदर्शन किया और राज्य की सभी चार सीटों पर कब्जा कर लिया। भाजपा मध्य प्रदेश और हिमाचल की एक-एक सीट पर जीत का परचम लहराने में सफल रही। पंजाब में आम आदमी पार्टी ने एक सीट पर जीत का परचम लहराया है।

आयुष्मान भारत योजना में 34.7 करोड़ कार्ड बने

एजेंसी

नई दिल्ली। आयुष्मान भारत योजना में 34.7 करोड़ आयुष्मान कार्ड बनाए गए हैं और 7.35 करोड़ से अधिक अस्पताल में भर्ती हुए हैं, जिनके लिए एक लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि का भुगतान किया गया है। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जगत प्रकाश नड्डा ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण (एनएचए) के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (पीएमजेएवाई) और आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (एबीडीएम) की समीक्षा की। बैठक में बताया गया कि आयुष्मान भारत योजना ने 34.7 करोड़ आयुष्मान कार्ड जारी किए गए हैं और 7.35 करोड़ लोग अस्पताल में भर्ती हुए हैं। इनके लिए एक लाख करोड़ रुपए से अधिक का भुगतान किया गया है।

एनएचए की मुख्य कार्यकारी अधिकारी दीप्ति गौर मुखर्जी ने केंद्रीय मंत्री के समक्ष योजनाओं की मुख्य विशेषताओं, वर्तमान स्थिति और उनके संचालन के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत प्रस्तुति दी।

इसके अलावा एनएचए ने पैनल में शामिल अस्पतालों के नेटवर्क को मजबूत करने और उनके साथ प्रभावी ढंग से जुड़ने की योजना प्रस्तुत की। केंद्रीय मंत्री ने

अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि इन दूरदर्शी योजनाओं का लाभ समाज के सबसे जरूरतमंद और कमजोर वर्गों तक पहुंचे। उन्होंने कहा कि यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि पीएम-जेएवाई के प्रभावी कार्यान्वयन में बाधा डालने वाली चुनौतियों और मुद्दों को राज्यों के साथ समन्वय करके जल्दी हल किया जाए। उन्होंने एनएचए को राज्यों के साथ नियमित आधार पर जुड़ने और समन्वय करने का निर्देश दिया है ताकि मौजूदा मुद्दों को गहराई से समझा जा सके और उन्हें एक साथ हल किया जा सके। श्री नड्डा ने कहा कि पात्र लाभार्थियों के आयुष्मान कार्ड बनाने की प्रक्रिया को मजबूत करने और विस्तारित करने के लिए व्यापक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है।

श्री नड्डा ने कहा कि लाभार्थियों के अनुभवों से सीखना महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि लाभार्थियों से सीधे जुड़ने और उनके अस्पताल में भर्ती होने तथा उपचार के अनुभवों को एकत्र करने के लिए स्मार्ट प्रौद्योगिकी उपकरणों का उपयोग किया जा सकता है।

उपचुनाव के नतीजों पर विपक्षी दलों के नेताओं का जश्न, दिल बहलाने के लिए अच्छा ख्याल है- अमित मालवीय

एजेंसी

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव के बाद हुए देश के अलग-अलग राज्यों के कुल 13 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव में 10 पर इंडिया ब्लॉक के घटक दलों को 2 पर बीजेपी को तो एक सीट पर निर्दलीय उम्मीदवार ने जीत दर्ज की है। ऐसे में इंडी गठबंधन के सभी घटक दलों के नेताओं की तरफ से इस पर प्रतिक्रिया आ रही है और सभी इस बात की तरफ इशारा कर रहे हैं कि जनता का भरोसा इंडी गठबंधन पर बढ़ा है और उन्होंने भाजपा को नकार दिया है। कांग्रेस नेता और लोकसभा में एलओपी राहुल गांधी ने तो अपने सोशल मीडिया एक्स हैंडल पर लिखा कि को जीत मिली है। उन्होंने लिखा,7 राज्यों में हुए उपचुनाव के नतीजों ने स्पष्ट कर दिया है कि भाजपा द्वारा बुना गया भय और भ्रम का जाल टूट चुका है। किसान, नौजवान, मज़दूर, व्यापारी और नौकरीपेशा समेत हर वर्ग तानाशाही का समूल नाश कर न्याय का राज स्थापित करना चाहता है। अपने जीवन की बेहतरी और संविधान की रक्षा के लिए जनता अब पूरी तरह से इंडी गठबंधन के साथ खड़ी है। जय हिंदुस्तान, जय संविधान।इसी को लेकर भाजपा नेता अमित मालवीय ने सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट कर कांग्रेस और इंडी गठबंधन के अन्य दलों के नेताओं को करारा जवाब दिया है। अमित मालवीय ने इस पोस्ट में लिखा है। ये नतीजे इंडी एलायंस की हताशा की स्थिति में किसी तरह अच्छा महसूस करने के प्रयास के अलावा कुछ नहीं है। उन्होंने आगे लिखा कि इस नतीजे पर इंडी गठबंधन और खासकर कांग्रेस के नेता जैसा जश्न मना रहे हैं नतीजों में तो ऐसा कुछ भी नजर नहीं आ रहा है। उन्होंने देश के अलग-अलग राज्यों के कुल 13 विधानसभा सीटों का पूरा लेखा-जोखा लिखकर इस पर पोस्ट किया है।उन्होंने सवाल भरे लहजे में लिखा कि क्या इंडी गठबंधन उपचुनाव में जीत का जश्न मना रही है? ऐसी क्या खुशी उन्हें मिली है? बंगाल में 4 सीटों पर उपचुनाव में पूरी तरह धांधली हुई।

नोएडा प्राधिकरण की बोर्ड बैठक : शहर के पुराने निवासियों, नए आवंटियों और किसानों को मिली बड़ी राहत

नोएडा। नोएडा प्राधिकरण ने लखनऊ में आयोजित अपनी बोर्ड बैठक में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए। प्रदेश के मुख्य सचिव एवं नोएडा-ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के चेयरमैन मनोज कुमार सिंह की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में शहर के निवासियों और आवंटियों के हित में दो बड़े फैसले लिए गए हैं। नोएडा के मुख्य कार्यपालक अधिकारी लोकेश एम ने इन निर्णयों की जानकारी देते हुए बताया, ÷प्राधिकरण ने आवंटियों और किसानों के लिए समय सीमा बढ़ाने का फैसला लिया है, जो निश्चित रूप से उनके लिए एक बड़ी राहत साबित होगा।

आवंटियों को मिली राहतः प्राधिकरण में लगभग 25 ऐसे आवंटी हैं, जिन्होंने प्लॉट आवंटन के 12 साल बाद भी उस पर निर्माण नहीं किया है। ऐसे आवंटियों को राहत देते हुए निर्णय लिया गया है कि वे 12 साल के बाद आवंटन दर का 10 प्रतिशत जमा करके निर्माण के लिए समय विस्तार ले सकते हैं। हालांकि, इसके लिए आवंटियों को तीन महीने के भीतर आवेदन करना होगा। सीईओ लोकेश एम ने कहा, यह निर्णय उन आवंटियों के लिए एक बड़ी राहत है, जो किसी कारणवश अपने प्लॉट पर निर्माण नहीं कर पाए थे। हम उम्मीद करते हैं कि इससे शहर में निर्माण गतिविधियां बढ़ेंगी।

किसानों के लिए विशेष प्रावधान

किसानों के हित में भी एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया है। जमीन अधिग्रहण के बदले में मिले 5 प्रतिशत आवासीय भूखंडों पर भवन निर्माण के लिए, 2 साल की मूल समय सीमा के बाद अतिरिक्त 3 साल का निःशुल्क समय विस्तार दिया जाएगा। इसके लिए किसानों को प्राधिकरण में आवेदन करना होगा। यह निर्णय किसानों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है,लोकेश एम ने कहा, हम चाहते हैं कि किसान अपने भूखंडों का अधिकतम लाभ उठा सकें। बैठक में नोएडा के सेक्टर-151ए स्थित गोल्फ कोर्स की सदस्यता को फिर से खोलने का निर्णय भी लिया गया। वर्तमान में इसके 1000 सदस्य हैं। काफी समय से इसकी सदस्यता को दोबारा खोलने पर विचार किया जा रहा था, जिस पर अब प्राधिकरण बोर्ड ने सहमति दे दी है।

अनंत-राधिका की शादी में मिस्ट्री मैन की बांहों में दिखीं

अनन्या पांडे

सोशल मीडिया पर वायरल हुई फोटो

इस समय सोशल मीडिया पर जो चीज सबसे ज्यादा सुर्खियों में बनी हुई है, वो अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट की शादी है। ये कपल 12 जुलाई को 7 फेरे लेकर हमेशा-हमेशा के लिए एक-दूसरे के हो गए हैं। जियो वर्ल्ड सेंटर में अनंत-राधिका की शाही शादी का आयोजन किया गया, जिसमें कई मेहमानों ने पहुंच कर कपल को आशीर्वाद दिया।बी टाउन के कई सेलेब्स इस शाही शादी का हिस्सा बने, जिसमें से कई स्टार्स यूनिक आउटफिट पहन कर आए और हर किसी का ध्यान अपनी तरफ खींचा। अनन्या पांडे ने अपनी ड्रेस पर अनंत की ब्रिगेड लिखवाया था। इसके साथ ही उन्होंने बारात में भी काफी डांस किया।

फिर चाहें वो क्रिकेटर हार्दिक पांड्या के साथ हो या शिखर धवन, रणवीर सिंह और शिखर पहाड़िया के साथ। इसकी कई वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुई। हालांकि, अब उनकी एक फोटो वायरल हो रही है, जिसमें वह मिस्ट्री मैन की बांहों में दिखाई दे रही हैं।

मिस्ट्री मैन संग नजर आई अनन्या

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म रेडिट पर अनंत-राधिका की शादी से एक्ट्रेस अनन्या पांडे की एक तस्वीर वायरल हो रही है, जिसमें वह एक मिस्ट्री मैन के साथ दिखाई दे रही हैं। इस फोटो में देखा जा सकता है कि मिस्ट्री मैन ने उन्हें अपनी बांहों में पकड़ा हुआ है। वहीं, एक्ट्रेस स्माइल करते हुए नजर आ रही हैं। हालांकि, वो शख्स कौन है ये जानकारी अभी सामने नहीं आई है।

अनन्या ने पहना था येलो आउटफिट

अनन्या पांडे ने अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट की शादी में येलो कलर का लहंगा-चोली पहना था। इस लहंगे में वह बेहद ही खूबसूरत लग रही थीं। इसके साथ ही उन्होंने माथे पर बिंदी, लाइट मेकअप और स्लीक बन बनाकर अपना लुक पूरा किया था। एक्ट्रेस का यह लुक उनके फैंस को भी काफी पसंद आया था। उन्होंने सोशल मीडिया पर अनन्या की तारीफ भी की।

चोली के पीछे... गाने पर माधुरी दीक्षित ने 31 साल बाद लगाए ठुमके, अनंत-राधिका की शादी में खूब थिरकीं

अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट की शादी 12 जुलाई 2024 को बड़े धूम-धाम से हुई. देश के सबसे अमीर घर की शादी थी तो लाइमलाइट तो लूटेगी ही. सोशल मीडिया पर हर तरफ अनंत अंबानी और राधिका की शादी के विजुअल्स छाए हुए हैं. शादी में बॉलीवुड से लेकर हॉलीवुड तक के सितारों ने शिरकत की. धक धक गर्ल के नाम से मशहूर माधुरी दीक्षित भी इस शादी का हिस्सा थीं और इस खास मौके पर वे भी जमकर थिरकतीं नजर आईं.

सोशल मीडिया पर उनका एक वीडियो खूब वायरल हो रहा है जिसमें वे संजय दत्त के साथ आई उनकी 31 साल पुरानी फिल्म खलनायक के गाने चोली के पीछे क्या है पर डांस करती नजर आ रही हैं. ये गाना जब आया था उस दौरान खूब पॉपुलर रहा था. अब उन्होंने अनंत अंबानी की शादी में इस गाने को रिक्रिएट किया और उनके साथ-साथ सभी थिरकने लग गए. माधुरी इस दौरान ट्रेडिशनल लुक में नजर आ रही हैं और बहुत खूबसूरत लग रही हैं उनके बगल में रैपर एमिनम भी हैं जो खुद को डांस करने से रोक नहीं पाए और जमकर थिरक रहे हैं. फैन्स भी माधुरी के इस डांस पर खूब कमेंट करते नजर आ रहे हैं.

क्या कह रहे हैं लोग ?

एक शख्स ने लिखा- माधुरी दीक्षित अभी भी कितनी खूबसूरत लग रही हैं. एक दूसरे शख्स ने लिखा- माधुरी के बगल में एमिनम वहां क्या कर रहे हैं. इसके अलावा कई सारे यूजर्स माधुरी के इस डांस पर हार्ट इमोजी शेयर करते नजर आ रहे हैं. अनंत और राधिका की शादी में सलमान खान और शाहरुख खान भी एक साथ नजर आए और नीता अंबानी के साथ खूब डांस किया. रजनीकांत भी अनंत-राधिका की शादी में डांस करते नजर आए. वर्ल्ड हैवीवेट चैंपियन जॉन सीना इस खास समारोह का हिस्सा बने और अपने स्वैग में नजर आए.

बबीता जी की माफी से शैलेश लोढ़ा के केस तक, 16 सालों में वो 16 विवाद, जिन्होंने 'तारक मेहता' के पक्के फैन्स को निराश किया

सोनी सब टीवी का मशहूर टीवी शो 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' पिछले 16 सालों से दर्शकों का खूब मनोरंजन कर रहा है. मशहूर गुजराती राइटर तारक मेहता के लिखे 'दुनिया ने ऊंधा चश्मा' कॉलम से प्रेरित होकर असित मोदी ने कॉमेडी सिटकॉम 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' बनाया. 16 साल पहले 28 जुलाई 2008 को इस शो का पहला एपिसोड ऑन एयर हुआ था. लेकिन इस 16 साल के इस सफर में देश का ये मशहूर शो और इस शो के कलाकार कई बार कंट्रोवर्सी की चपेट में आए. तो आइए एक नजर डालते हैं असित मोदी के शो और इस शो के कलाकारों से जुड़े 16 विवादों पर.

1. ओरिजिनल टप्पू का शो छोड़ना

तारक मेहता का उल्टा चश्मा में टप्पू के किरदार के लिए भव्य गांधी की कास्टिंग की गई थी. 9 साल तक टप्पू का किरदार निभाने के बाद भव्य ने साल 2017 में इस शो को छोड़ने का फैसला लिया. प्रोडक्शन की तरफ से भव्य को रोकने की काफी कोशिश हुई. लेकिन वो अपना फैसला ले चुके थे. मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो भव्य फिल्मों में अपना करियर बनाना चाहते थे और इसलिए उन्होंने ये शो छोड़ने का फैसला लिया था. फैन्स के साथ-साथ उनके इस फैसले से प्रोडक्शन हाउस भी उन पर बहुत नाराज था.

2. एमएनएस के निशाने पर आए थे चंपक चाचा

तारक मेहता का उल्टा चश्मा के एक पुराने एपिसोड में चंपक चाचा को ये कहते हुए दिखाया गया था कि मुंबई की भाषा हिंदी है. उनके इस डायलॉग के बाद राज ठाकरे की महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना ने सीरियल में जेठालाल के पिता का किरदार निभाने वाले एक्टर अमित भट्ट को धमकी दे डाली थी. एमएनएस की धमकी के बाद अमित भट्ट और असित मोदी दोनों ने ऑफिशियल स्टेटमेंट जारी करते हुए लोगों की भावनाओं को आहत करने के लिए माफी मांगी थी.

3. लता मंगेशकर के गाने के बारे में दी थी गलत जानकारी

साल 2022 के अप्रैल में ऑन एयर हुए गोकुलधाम सोसायटी वाले एक एपिसोड में लता मंगेशकर ने गाए हुए 'ए मेरे वतन के लोगों' गाने के रिलीज ईयर को 1965 बताया गया था. नेशनल टीवी पर गलत जानकारी देने के लिए लोगों ने 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' की पूरी टीम को खूब ट्रोल किया था. जब प्रोडक्शन को अपनी इस बड़ी गलती का एहसास हुआ तब असित मोदी के नीला टेलीफिल्म ने इंस्टाग्राम पर एक स्टेटमेंट रिलीज करते हुए कहा, "हम 'तारक मेहता' के तमाम फैन्स से माफी मांगना चाहते हैं. हमने आज ऑन एयर हुए एपिसोड में गलती से 'ए मेरे वतन के लोगों' गाने का रिलीज साल 1965 बता दिया था. लेकिन असल में वो गाना 26 जनवरी 1963 में रिलीज़ हुआ था. हम इस गलती को सुधार रहे हैं और साथ ही हम ये वादा करते हैं कि भविष्य में इन चीजों को लेकर ज्यादा सावधानी बरती जाएगी."

अनंत-राधिका की शादी में Janhvi Kapoor को पकड़कर यूं डांस करते नजर आए शिखर पहाड़िया, लोगों ने कहा- अगला नंबर...

अनंत और राधिका 12 जुलाई को शादी के परिणय सूत्र में बंध चुके हैं। दोनों बहुत जल्द नई जिंदगी की शुरुआत करने वाले हैं। शादी के वायरल वीडियोज के बीच एक वीडियो जाह्नवी कपूर का भी है जिसमें वो अपने ब्वॉयफ्रेंड शिखर पहाड़िया के साथ डांस करती हुई नजर आ रही हैं। रेमा के गाने पर कई स्टार्स थिरकते नजर आए।

अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट ने शुक्रवार 12 जुलाई को मुंबई में बॉलीवुड के बीच शादी की। इस भव्य समारोह के लिए दुनिया भर से मेहमान एकत्र हुए। फेरों से पहले परिवार के सदस्य एंटीलिया से फूलों से सजी लक्जरी कार में बारात लेकर वेडिंग वेन्यू पहुंचे। अनंत और राधिका के दोस्तों के साथ-साथ बॉलीवुड सितारे भी बारात में थिरकते नजर आए।जाह्नवी कपूर और शिखर को साथ में डांस करते हुए देख फैंस काफी खुश हो गए और दोनों की तारीफ करने लगे। एक फैन ने कमेंट करते हुए लिखा- कमाल की जोड़ी है। दूसरे ने लिखा- कितने प्यार लग रहे हैं।अगला नंबर जाह्नवी का है, एक अन्य यूजर ने कमेंट किया।

जाह्नवी का वीडियो हुआ वायरल

एक तरफ जहां सलमान, शाह रुख खान, रणवीर सिंह, अर्जुन कपूर, अनन्या पांडे का डांस वीडियो वायरल हो रहा है। वहीं एक और वीडियो है जिसने हम सभी का ध्यान अपनी ओर खींचा। इस वीडियो में जाह्नवी कपूर अपने ब्वॉयफ्रेंड शिखर पहाड़िया के साथ ठुमके लगाती नजर आईं। दरअसल स्टेज पर ग्लोबल म्यूजिक सेंसेशन रेमा ने महफिल जमाई हुई थी। रेमा को अपने गाने काम डाउन के लिए जाना जाता है।वायरल वीडियो में शिखर जाह्नवी को नजदीक पकड़कर डांस करते नजर आए। दोनों एक दूसरे में गुम दिखे। शादी में जाह्नवी ने गोल्डन कलर का लहंगा चोली पहन रखा था वहीं शिखर पहाड़िया रेड कलर के सीक्विन कुर्ते में नजर आए। वहीं साइड में अनन्या पांडे भी ओरी के साथ डांस कर रही थीं।

जियो सेंटर में सेलेब्स का जमावड़ा

इस शादी में सितारों की भीड़ उमड़ी जिसमें प्रियंका चोपड़ा जोनस, निक जोनस, शाहरुख खान, सलमान खान, रणवीर-दीपिका, शाहिद-मीरा, माधुरी दीक्षित-श्रीराम नेने, जूही चावला, एश्वर्या राय, रेखा, आलिया-रणबीर, विक्की-कटरीना, सिद्धार्थ मल्होत्रा- कियारा आडवाणी जैसी बॉलीवुड हस्तियां शामिल थे। इसके अलावा किम कार्दशियन, ख्लो कार्दशियन, यूके के पूर्व पीएम बोरिस जॉनसन, जॉन सीना जैसे अंतरराष्ट्रीय सितारे भी इसका हिस्सा बने।

गोरखपुर में बनेगा अंतरराष्ट्रीय स्तर का स्टेडियम, पूर्वांचल के खिलाड़ियों की निखरेगी प्रतिभा

एजेंसी

लखनऊ। गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्र में वैश्विक स्तर का क्रिकेट स्टेडियम बनेगा। इसके निर्माण की घोषणा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गत छह जुलाई को गोरखपुर दौरे में की थी। करीब 100 एकड़ में बनने वाले इस स्टेडियम की जमीन के लिए सड़क, हवाई यातायात की कनेक्टिविटी को ध्यान रखा जाएगा। अगर ऐसा हुआ तो कानपुर, लखनऊ, वाराणसी के बाद उत्तर प्रदेश का यह चौथा अंतरराष्ट्रीय स्तर का स्टेडियम होगा। इसका लाभ न केवल गोरखपुर बल्कि पूर्वांचल, सटे हुए बिहार और मित्र राष्ट्र नेपाल की खेल प्रतिभाओं को भी मिलेगा। बेहतर प्रशिक्षण के जरिए क्रिकेट खिलाड़ी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पूर्वांचल का नाम रोशन करेंगे। इस स्टेडियम के निर्माण से स्पोर्ट्स के कारोबार, स्पोर्ट्स टूरिज्म और हॉस्पिटैलिटी सेक्टर को भी लाभ होगा। यही नहीं इससे स्पोर्ट्स के कारोबार में भी बूम आएगा। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के मैच शुरू होने पर स्पोर्ट्स टूरिज्म और हॉस्पिटैलिटी सेक्टर को भी लाभ होगा। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री आदित्यनाथ को खेलों से खासा लगाव है। समय-समय पर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदेश एवं देश का नाम रोशन करने वाले खिलाड़ियों से वह न केवल मिलते हैं बल्कि उनको सम्मानित भी करते हैं। इसी क्रम में कुछ रोज पहले टी-20 विश्व विजेता टीम के हिस्सा रहे उत्तर प्रदेश के क्रिकेटर कुलदीप यादव से भी उनकी अपने आवास पर भेंट हुई थी।

पूर्व खिलाड़ियों की अपील का हुआ असर, बीसीसीआई ने अंशुमान गायकवाड़ को दी वित्तीय मदद

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने पूर्व खिलाड़ी और टीम इंडिया के कोच रह चुके अंशुमान गायकवाड़ को वित्तीय मदद देने की घोषणा की है। गायकवाड़ ब्लड कैंसर से जूझ रहे हैं और उनका लंदन के एक अस्पताल में इलाज चल रहा है। बीसीसीआई सचिव जय शाह ने शीर्ष परिषद को निर्देश देते हुए गायकवाड़ को एक करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता देने कहा है। वित्तीय मदद के अलावा जय शाह ने गायकवाड़ के परिजनों से संपर्क किया और उनके हालचाल जाने। वहीं, बीसीसीआई सचिव ने किसी भी तरह की मदद का प्रस्ताव भी दिया। बीसीसीआई ने आश्वस्त करते हुए कहा कि वे गायकवाड़ की स्थिति पर नजर रखे हुए हैं और उनका इलाज किस तरह चल रहा है इस पर भी उनकी नजर है। बोर्ड ने इस चुनौतीपूर्ण समय में पूर्व खिलाड़ी के परिवार को हर संभव मदद का भी आश्वासन दिया है। गायकवाड़ की मदद के लिए 1983 विश्व कप विजेता कप्तान कपिल देव और संदीप पाटिल जैसे पूर्व क्रिकेटर आगे आए थे और उन्होंने बीसीसीआई से गायकवाड़ की मदद करने की अपील की थी। कपिल ने खुलासा करते हुए बताया था कि टीम के उनके पूर्व साथी मोहिंदर अमरनाथ, सुनील गावस्कर, दिलीप वेंगसरकर, मदन लाल, रवि शास्त्री और कीर्ति आजाद गायकवाड़ के इलाज के लिए फंड जुटाने को लेकर अपना पूरा प्रयास कर रहे हैं।

45वें शतरंज ओलंपियाड के लिए भारतीय टीम में चुने गए गुकेश और प्रज्ञानंद

नई दिल्ली। डी. गुकेश और आर. प्रज्ञानंद को भारतीय नाम में शामिल किया गया है। दोनों सितंबर में हंगरी के बुडापेस्ट में आयोजित होने वाले 45वें शतरंज ओलंपियाड में भाग लेंगे। गुकेश इस प्रतियोगिता के जरिए अपनी तैयारियों को मजबूती देंगे। दरअसल, नवंबर में वह विश्व शतरंज चैंपियनशिप में चीन के गत विश्व चैंपियन डिंग लीरेन को चुनौती देंगे। 18 वर्षीय खिलाड़ी ने इस साल शानदार प्रदर्शन किया है। उन्होंने अप्रैल में टोरंटो में प्रतिष्ठित कैंडिडेट्स प्रतियोगिता जीती थी और विश्व चैम्पियनशिप के फाइनल में भाग लेने वाले सबसे कम उम्र के खिलाड़ी बने थे। एआईसीएफ अध्यक्ष नितिन नारंग ने पीटीआई को टीमों की पुष्टि करते हुए बताया कि टीम में अर्जुन एरिगैसी, विदित गुजराती और हरिकृष्ण पेंटाला को भी शामिल किया गया है। महिला टीम में हरिका द्रोणावल्ली, वैशाली रमेशबाबू, दिव्या देशमुख, वंतिका अग्रवाल और तानिया सचदेव शामिल हैं। इस टीम में ग्रैंडमास्टर कोनेरू हम्पी को नहीं मौका मिला है, जिन्होंने 2022 में कांस्य पदक जीता था। इस दौरान नारंग ने बताया कि प्री-इवेंट कैंप आयोजित करने के लिए कोचों के साथ चर्चा चल रही है। भारत ने 2022 में पहली बार ओलंपियाड के पिछले संस्करण की मेजबानी की थी, जहां मेजबान टीम ने ओपन और महिला दोनों श्रेणियों में कांस्य पदक जीता था। यह ओलंपियाड का 45वां संस्करण होगा। हंगरी पहली बार आधिकारिक तौर पर इस आयोजन की मेजबानी करेगा। इससे पहले उसने 1926 में दूसरे अनौपचारिक शतरंज ओलंपियाड की मेजबानी की थी।

दक का रंग बदलने को बेताब होंगी लवलीना

नई दिल्ली। भारत के अन्य एथलीटों की तरह ही भारतीय मुक्केबाज भी पेरिस ओलंपिक के लिए पूरी तरह कमर कस चुके हैं। इस बार देश को निकहत जरीन और टोक्यो ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता लवलीना बोरगोहेन से पदक लाने की काफी उम्मीदें हैं। भारत की ओर से चार महिला और दो पुरुष मुक्केबाजों से पदक लाने की उम्मीदें हैं, लेकिन इनमे लवलीना और निकहत पर दारोमदार रहेगा। मुक्केबाजी ऐसी स्पर्धा है जिसमें पिछले चार ओलंपिक में से तीन में भारत पदक लाने में सफल रहा है। ओलंपिक मुक्केबाजी में पिछले दो पदक देश की बेटियों मैरीकॉम और लवलीना बोरगोहेन ने दिलाए हैं और इस बार लवलीना के साथ निकहत से बड़ी उम्मीदें लगी हैं।

इंडिया चैंपियंस ने पाकिस्तान चैंपियंस को पांच विकेट से हरा दिया

एजेंसी

मोगादिशू। बर्मिंघम में खेले गए विश्व चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स के फाइनल मुकाबले में युवराज सिंह की अगुवाई वाले इंडिया चैंपियंस ने पाकिस्तान चैंपियंस को पांच विकेट से हरा दिया। भारत ने इस टूर्नामेंट का पहला खिताब अपने नाम कर लिया। इस मुकाबले में पाकिस्तान ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवरों में छह विकेट पर 156 रन बनाए। पाकिस्तान की तरफ से शोएब मलिक ने 41 रनों की तूफानी पारी खेली। इसके जवाब में भारत ने अंबाती रायडू के अर्धशतक की बदौलत 19.1 ओवर में पांच विकेट पर 159 रन बना कर खिताब अपने नाम कर लिया। 157 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी भारतीय टीम की दमदार शुरुआत हुई। रॉबिन उथप्पा और अंबाती रायडू के बीच पहले विकेट के लिए 34 रनों की साझेदारी हुई। तीसरे नंबर पर

बल्लेबाजी के लिए आए सुरेश रैना कुछ खास नहीं कर पाए और चार रन बनाकर पवेलियन लौट गए। इसके बाद गुरकीरत सिंह मान ने मोर्चा संभाला और दो चौकों और एक छक्के की मदद से 34 रनों की पारी खेली। यूसुफ पठान ने 30 रन बनाए। वहीं, युवराज 15 और इरफान पांच रन बनाकर नाबाद रहे। पाकिस्तान के लिए आमिर ने दो विकेट चटकाए जबकि सईद अजमल, वहाब रियाज और शोएब मलिक को एक-एक विकेट मिला।

ट्रिनबागो नाइट राइडर्स से मेंटर के रूप में जुड़ीं झूलन गोस्वामी

एजेंसी

नई दिल्ली। पूर्व भारतीय तेज गेंदबाज झूलन गोस्वामी महिला कैरेबियन प्रीमियर लीग से पहले मेंटर के रूप में त्रिनबागो नाइट राइडर्स (टीकेआर) से जुड़ गई हैं। 20 साल के शानदार अंतरराष्ट्रीय करियर में गोस्वामी ने 2022 में संन्यास लेने से पहले भारत के लिए सभी प्रारूपों में 355 विकेट हासिल किए।

वह स्टार ऑलराउंडर डिएंड्रा डॉटिन की अगुआई वाली टीम की मेंटर की भूमिका में नजर आएंगी, जिन्होंने 2021 में डब्ल्यूसीपीएल के उद्घाटन सत्र में टीकेआर महिलाओं को चैंपियनशिप खिताब दिलाया था।कोलकाता की पूर्व तेज गेंदबाज गोस्वामी ने एक विज्ञप्ति में कहा, ऐसी बेहतरीन फ्रेंचाइजी से जुड़ना सम्मान की बात है। नाइट राइडर्स ने भारत और दुनिया भर में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है और डब्ल्यूसीपीएल में टीकेआर महिलाओं से जुड़ना खुशी की बात है। मुझे मेंटर के तौर पर सोचने के लिए केकेआर प्रबंधन का शुक्रिया और मैं इस टूर्नामेंट का बेसब्री से इंतजार कर रही हूं।

नाइट राइडर्स प्रबंधन ने हाल ही में अंतरराष्ट्रीय सुपरस्टार जेमिमा रोड्रिग्स, मेग लैनिंग, जेस जोनासेन और शिखा पांडे को टीम में शामिल किया है, ताकि अगस्त में त्रिनिदाद और टोबैगो में होने वाले मुकाबले में दूसरी डब्ल्यूसीपीएल ट्रॉफी जीत सकें।गोस्वामी को टीकेआर सेटअप में शामिल करने पर नाइट राइडर्स समूह के सीईओ वेंकी मैसूर ने कहा,÷झूलन गोस्वामी खेल की एक बेहतरीन लीजेंड हैं और हम उन्हें टीकेआर महिला टीम की मेंटर के रूप में शामिल करके बहुत खुश हैं। टीकेआर एक बहुत ही गौरवशाली इकाई है, जिसने पिछले 10 वर्षों में पुरुष और महिला टीमों के बीच पांच चैंपियनशिप खिताब जीते हैं।

टीकेआर महिला टीम 22-27 अगस्त तक चार लीग मैच (बारबाडोस रॉयल्स और गुयाना अमेज़न वॉरियर्स के खिलाफ) खेलेगी। फाइनल 29 अगस्त को तारौबा में ब्रायन लारा क्रिकेट अकादमी में खेला जाएगा।

डब्ल्यूसीपीएल 2024 के लिए टीकेआर महिला टीम-

रिटेन किए गए कैरेबियाई खिलाड़ी- डिएंड्रा डॉटिन (कप्तान), किसिया नाइट (विकेट कीपर), शमिला कोनेल, जैदा जेम्स, समारा रामनाथ;

नए खिलाड़ीः मेग लैनिंग, जेमिमा रोड्रिग्स, जेस जोनासेन, शिखा पांडे।

भारत ने चौथे टी-20 में जिम्बाब्वे को 10 विकेट से हराया, 5 मैचों की श्रृंखला में ली 3-1 की अपराजेय बढ़त

एजेंसी

हरारे। भारतीय क्रिकेट टीम ने चौथे टी-20 मैच में जिम्बाब्वे को 10 विकेट से करारी शिकस्त देकर पांच मैचों की श्रृंखला में 3-1 की अजेय बढ़त हासिल कर ली है। यह श्रृंखला जीत इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि इस भारतीय टीम में रोहित, कोहली, बुमराह, जडेजा जैसे बड़े खिलाड़ी नहीं थे।

153 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी भारतीय टीम को यशस्वी जयसवाल और शुभमन गिल ने अच्छी शुरुआत दिलाई। जयसवाल और गिल ने जिम्बाब्वे के गेदबाजों की जमकर धुनाई की और केवल 15.2 ओवर में 156 रन बनाकर भारत को जीत दिला दी। जयसवाल ने चौका लगाकर भारत को जीत दिलाई। जयसवाल 53 गेंदों पर 13 चौके और 2 छक्के की बदौलत 93 रन बनाकर नाबाद रहे। जबकि गिल ने 39 गेंदों पर 6 चौके और 2 छक्के

की बदौलत 58 रनों की शानदार नाबाद अर्धशतकीय पारी खेली। यशस्वी जयसवाल को उनकी शानदार बल्लेबाजी के लिए मैन ऑफ द मैच चुना गया। दोनों टीमों के बीच पांचवां और अंतिम मैच रविवार को खेला जाएगा।

जिम्बाब्वे ने 7 विकेट पर 152 रन बनाए

इससे पहले मैच में भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने टॉस जीतकर जिम्बाब्वे को पहले बल्लेबाजी का निमंत्रण दिया। जिम्बाब्वे को विसली मधेवेरे और तदिवानाशे मारुमानी ने अच्छी शुरुआत दिलाई। दोनों ने पहले विकेट के लिए 63 रन जोड़े। हालांकि इसके बाद चार रन के अंतराल के बाद दोनों बल्लेबाज पवेलियन लौट गए। मधेवेरे के शिवम दुबे और मारुमानी को अभिषेक शर्मा ने पवेलियन भेजा। मधेवेरे ने 24 गेंदों पर 4 चौकों की बदौलत 25 और मारुमानी ने 31 गेंदों पर 3 चौकों की बदौलत 32 रन बनाए।

इन दोनों के बाद केवल कप्तान सिकंदर रजा ही टिककर खेल सके और जिम्बाब्वे को 20 ओवर में 7 विकेट पर 152 रन तक पहुंचाया। रजा ने 28 गेंदों पर 2 चौके और 3 छक्के की बदौलत 46 रन बनाए।भारत की तरफ से खलील अहमद ने 2 और तुषार देशपांडे, वाशिंगटन सुंदर, अभिषेक शर्मा और शिवम दुबे ने 1-1 विकेट लिया।

जिला एथलेटिक्स मीट की शानदार शुरुआत, 170 खिलाड़ी हुए शामिल

एजेंसी

सहरसा। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत जिला एथलेटिक्स संघ के तत्वाधान में दो दिवसीय जिला एथलेटिक मीट का उदघाटन स्टेडियम में बनगांव के नगर पंचायत उपाध्यक्ष रुपेश कामत ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया।उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि मैं खिलाड़ी पृष्ठभूमि से रहा हूं और मुझे जब भी ऐसे मौके पर बुलाया जाता है। तो मुझे बहुत खुशी होती है।मैं भी इसी मैदान में महज दो-तीन साल पहले तक खेला करता था। बच्चों को खेलाया करता था।समय का अभाव है लेकिन जब भी खेल संघ मुझे याद करेगा मैं एक खिलाड़ी के रूप में मैदान में मौजूद रहेगें। जिला सचिव रोशन सिंह धोनी ने कहा इस प्रतियोगिता से चयनित सभी खिलाड़ियों को आगामी 19 से 21 तक पटना में आयोजित राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में शिरकत करने का मौका मिलेगा एवं राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में बेहतर प्रदर्शन करने

वाले खिलाड़ियों को आगामी राष्ट्रीय प्रतियोगिता में शामिल किया जाएगा।आज के इस प्रतियोगिता में जिला के नवहट्टा,सिमरी बख्तियारपुर कहरा,नगर निगम, सत्तर कटैया, सौर बाजार, सोनबरसा से लगभग 170 खिलाड़ी शामिल हुए।जिसमें 100 लड़के एवं 70 लड़कियां शांतिपूर्ण हुई।

वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरे टेस्ट के लिए इंग्लैंड टीम में शामिल हुए मार्क वुड

एजेंसी

लंदन। तेज गेंदबाज मार्क वुड को वेस्टइंडीज के खिलाफ 18 जुलाई से नॉटिंघम के ट्रेंट ब्रिज में शुरू होने वाले दूसरे टेस्ट के लिए इंग्लैंड टीम में शामिल किया गया है। इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने एक बयान जारी कर वुड को टीम में शामिल करने की घोषणा की, जिन्होंने दिग्गज तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन की जगह ली है। एंडरसन ने लॉर्ड्स में पहले टेस्ट में वेस्टइंडीज पर जीत के बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया था।

ईसीबी ने अपने बयान में कहा, डरहम के तेज गेंदबाज मार्क वुड को अगले गुरुवार को ट्रेंट ब्रिज, नॉटिंघम में वेस्टइंडीज के खिलाफ शुरू होने वाले दूसरे टेस्ट के लिए इंग्लैंड पुरुष टेस्ट टीम में शामिल किया गया है। एंडरसन ने इंग्लैंड के लिए अपना आखिरी टेस्ट में (1/26 और 3/32) 4 विकेट लिए। 2003 में लॉर्ड्स में पदार्पण करने के बाद, एंडरसन ने प्रतिष्ठित स्पिन जोड़ी

मुथैया मुरलीधरन (800) और शेन वार्न (708) के पीछे 704 टेस्ट विकेट के साथ अपने शानदार करियर का अंत किया।

स्टार पेसर ने इंग्लैंड की एक पारी और 114 रनों की जीत में शानदार प्रदर्शन किया। इंग्लैंड ने पहले टेस्ट में युवा तेज गेंदबाज गस एटकिंसन को भी पहला टेस्ट कैप दिया और उन्होंने 106 रन देकर 12 विकेट चटकाए, जो टेस्ट इतिहास में किसी पदार्पण पर चौथा सर्वश्रेष्ठ आंकड़ा है। इसमें पहली पारी में सात विकेट भी शामिल थे।

दूसरे टेस्ट के लिए इंग्लैंड की टीम: बेन स्टोक्स (कप्तान), गस एटकिंसन, शोएब बशीर, हैरी ब्रूक, जैक क्रॉली, बेन डकेट, डैन लॉरेंस, डिलन पेनिंगटन, ओली पोप, मैथ्यू पॉट्स, जो रूट, जेमी स्मिथ, क्रिस वोक्स, मार्क वुड।

पेरिस ओलंपिक 2024: कुश्ती स्पर्धाओं में अंतिम को चौथी, अमन को छठी वरीयता

एजेंसी

नई दिल्ली। अंतिम पंघाल (महिला 53 किग्रा) और अमन सेहरावत (पुरुष 57 किग्रा) को 5 अगस्त से शुरू होने वाले पेरिस ओलंपिक की कुश्ती स्पर्धाओं के लिए अपने-अपने भार वर्गों में चौथी और छठी वरीयता दी गई है।दो बार की ओलंपियन विनेश, जो ओलंपिक के दौरान महिलाओं की 50 किलोग्राम फ्रीस्टाइल श्रेणी में प्रतिस्पर्धा करेंगी, को गैर वरीयता दी जाएगी। पहली बार, ओलंपिक में कुश्ती स्पर्धाओं में वरीयता दी जा रही है। पहलवानों ने 2023 विश्व चैंपियनशिप, 2024 कॉन्टिनेंटल चैंपियनशिप, 2024 ज़ाग्रेब ओपन रैंकिंग सीरीज़ और 2024 हंगेरियन रैंकिंग सीरीज़ के दौरान प्रदर्शन के आधार पर अपनी वरीयता अर्जित की। अंतिम के लिए यह वरीयता अनुकूल है, जिन्होंने पिछले साल ही विश्व चैंपियनशिप और एशियाई खेलों में कांस्य पदक हासिल किया था। इसका मतलब है कि वह पदक दौर की शुरुआत तक अपनी प्रतिद्वंद्वी

और जापान की दो बार की विश्व चैंपियन अकारी फुजिनामी और टोक्यो 2020 की रजत पदक विजेता चीन की कियानयू पैंग और स्वीडन की दो बार की यूरोपीय चैंपियन एम्मा माल्मग्रेन से मुकाबला नहीं करेंगी। हालांकि, अंतिम सेमीफाइनल में इक्वाडोर की लूसिया येपेज़ से मुकाबला कर सकती हैं, जो पिछले साल विश्व चैंपियनशिप की कांस्य पदक विजेता हैं। इस बीच, 2023 एशियाई चैंपियन और 2022 अंडर-23 विश्व चैंपियन अमन सेहरावत पदक दौर की शुरुआत से पहले जापान के री हिगुची या आर्मेनिया के आर्सेन हारुत्युनियन का सामना कर सकते हैं। हिगुची रियो 2016 रजत पदक विजेता और 2022 विश्व चैंपियन हैं, जिन्होंने पिछले जून में हंगरी रैंकिंग सीरीज़ में अमन पर जीत हासिल की थी।

भुल्लनपुर पीएसी में फुटबॉल प्रतियोगिता में 48वीं वाहिनी का ट्राफी पर कब्जा

एजेंसी

वाराणसी। चार दिवसीय 28वीं पीएसी पूर्वी जोन अंतर वाहिनी फुटबाल प्रतियोगिता के फाइनल मैच में 48वीं वाहिनी सोनभद्र ने ट्राफी पर कब्जा जमा लिया। वाराणसी के 34वीं वाहिनी पीएसी, भुल्लनपुर की मेजबानी में आयोजित फाइनल मैच 48वीं वाहिनी पीएसी सोनभद्र एवं 34वीं वाहिनी भुल्लनपुर के बीच खेला गया। जिसमें 48वीं वाहिनी सोनभद्र ने अपना वर्चस्व दिखाते हुए 1-0 से इस मुकाबले को जीत लिया। विजेता टीम को चल बैजन्ती शील्ड दिया गया। वाहिनी भुल्लनपुर

उपविजेता रही। प्रतियोगिता के आयोजन सचिव सेनानायक, 34वीं वाहिनी पीएसी वाराणसी पंकज पाण्डेय ने वाहिनी परेड ग्राउंड में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली टीमों एवं खिलाड़ियों को पदक प्रदान किया। चार दिवसीय इस प्रतियोगिता में उत्तर प्रदेश पीएसी पूर्वी जोन की विभिन्न 10 वाहिनियों से (4वीं वाहिनी, 12वीं, 20वी, 33वी, 34वी, 36वी, 37वी, 39वी, 42वी तथा 48वीं वाहिनी) से कुल 180 खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया। अलंकरण समारोह के दौरान सहायक सेनानायक नरेश सिंह यादव, शिविरपाल अजय प्रताप सिंह, दलनायक, बृजेश राय, बदन यादव, सहायक शिविरपाल मुन्नीलाल, सूबेदार मेजर गोपाल जी दूबे आदि भी मौजूद रहे।

अमेठी के अर्थव ने स्पोर्ट्स हास्टल लखनऊ के अखिलेश को दी मात, गौतमबुद्धनगर के क्षितिज ने भदोही के विश्वनाथ को हराया

एजेंसी

लखनऊ। साई लखनऊ में प्रदेश स्तरीय स्वीमिंग चैंपियनशिप की शुरूआत हई। इसमें विभिन्न 26 प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित हुई, जिसमें तैराकों ने जमकर उत्साह दिखाया। गौतमबुद्धनगर के तैराकों ने सर्वाधिक उपलब्धि हासिल किये। 800 मीटर फ्री स्टाइल में अमेठी के अर्थव सिंह ने स्पोर्टस हास्टल लखनऊ के अखिलेश यादव को मात दे दी। वहीं वहीं दूसरे वर्गमें गौतमबुद्धनगर के क्षितिज ने 10मिनट 12.29 सेकेंड में 800 मीटर तैराकी कर भदोही के 10 मिनट 29.34 सेकेंड में तैराकी पूरी करने वाले विश्वनाथ को हरा दिया।

वहीं बालिका वर्ग में गौतमबुद्धनगर की नाव्या सिंह ने कुशीनगर की अंकिता चौहान को हरा दिया। 100 मीटर बैक स्ट्रोक पुरुष वर्ग में गौतमबुद्धनगर के वेदांत ने बरेली के गौतम शाह को मात दे दी। वहीं महिला वर्ग में अंबेडकरनगर की धनन्या ने गौतमबुद्धनगर की अदेह गुप्ता को हरा दिया। इसी स्टाइल के दूसरे वर्ग में पुरुष वर्ग में भदोही के शिवकांत ने स्पोर्टस कालेज सैफई के अमरजीत को हराकर बढ़त बना ली। वहीं महिला वर्ग में झांसी की जिया यादव ने गौतमबुद्धनगर के आर्षिया को मात दी। 200 मीटर आईएम पुरुष वर्ग में गोरखपुर के अभिषेक कन्नौजिया ने गौतमबुद्धनगर के आदित्य को हराया। वहीं महिला वर्ग में अम्बेडकरनगर की धनन्या ने मिर्जापुर की अर्चना को मात दी। 50 मीटर फ्री स्टाइल में बरेली के गौतम शाह ने गौतमबुद्धनगर के वेदांत को हराया। महिला वर्ग में स्पोर्टस कालेज लखनऊ की शीतल निषाद ने देवरिया की दीपशिक्षा को मात दे दी। दूसरे 50 मीटर फ्री स्टाइल में अमेठी के अथर्व ने स्पोर्टस हास्टल लखनऊ के कृष्णा यादव को हरा दिया।

मेजबान लखनऊ ने जीते चार स्वर्ण, उप्र पुलिस, मथुरा व आगरा ने भी अपने नाम किए एक-एक स्वर्ण

एजेंसी

लखनऊ। मेजबान लखनऊ के खिलाड़ियों ने सब जूनियर, 8वीं कैडेट, जूनियर व सीनियर क्योरगी व पूमसे ताइक्वांडो चैंपियनशिप के दूसरे दिन भी शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए चार स्वर्ण पदक अपने नाम किए। उत्तर प्रदेश ताइक्वांडो एसोसिएशन के तत्वावधान में लखनऊ जिला ताइक्वांडो एसोसिएशन द्वारा केडी सिंह बाबू स्टेडियम के बहुउद्देश्यीय हाल में आयोजित चैंपियनशिप में दूसरे दिन साई लखनऊ व साई रायबरेली के खिलाड़ियों ने 2-2 स्वर्ण पदक जीते। आज मथुरा, आगरा, बिजनौर, यूपी पुलिस को भी एक-एक स्वर्ण पदक मिले। दूसरे दिन खेले गए मुकाबलों में लखनऊ ने 4 स्वर्ण, 3 रजत व 6 कांस्य पदक अपने नाम किए। लखनऊ के खिलाड़ी अब तक 12 स्वर्ण, 8 रजत व 10 कांस्य पदक के साथ सबसे आगे चल रहे हैं।

दूसरे दिन की स्पर्धाओं में मथुरा की विशाखा, बिजनौर के अभिषेक कुमार, लखनऊ के हर्ष जोशी, अनिका चौहान, उर्वशी, कृष्णा वर्मा, आगरा की आरती शर्मा, यूपी पुलिस के ऋषि राय, साई रायबरेली के शनि कुमार व विनीत कुमार एवं साई लखनऊ की सानिया खान, सुमित सिंह ने स्वर्ण पदक जीते। शनिवार की स्पर्धाओं में बालिका जूनियर अंडर-46 किग्रा भार वर्ग में मथुरा की विशाखा ने स्वर्ण, आगरा की चित्रा ने रजत एवं चंदौली की श्रेया कुमारी गुप्ता व लखनऊ की लकी प्रजापति ने कांस्य पदक जीते। पुरुष सीनियर अंडर-63 किग्रा में बिजनौर के अभिषेक कुमार ने स्वर्ण, साई लखनऊ के उज्जवल कुमार ने रजत एवं देवरिया के हर्ष कुमार यादव व जौनपुर के अनीश कुमार यादव ने कांस्य पदक जीते। पुरुष सीनियर अंडर-68 किग्रा में यूपी पुलिस के ऋषि राय ने स्वर्ण, आगरा के मुनेंद्र कुमार ने रजत एवं गौतमबुद्धनगर के आदर्श राज व वाराणसी के विकास सिंह यादव ने कांस्य पदक जीते। महिला सीनियर 73 किग्रा से अधिक भार वर्ग में आगरा की आरती शर्मा ने स्वर्ण, देवरिया की प्रियंका कुमारी ने रजत एवं गाजियाबाद की गगनदीप कौर व लखनऊ की रिया श्रीवास्तव ने कांस्य पदक जीते। महिला सीनियर अंडर-57 किग्रा में साई लखनऊ की सानिया खान ने स्वर्ण, लखनऊ की अक्षिता शाह ने रजत एवं गोरखपुर की ऐश्वर्या यादव व आगरा की पूर्ति भदौरिया ने कांस्य पदक जीते। बालक कैडेट अंडर-152 सेमी. में लखनऊ के हर्ष जोशी ने स्वर्ण, प्रयागराज के अयान ने रजत एवं सहारनपुर के आराध्य चौधरी व जालौन के ऋषभ कुमार ने कांस्य पदक जीते। बालक कैडेट अंडर-148 सेमी. में लखनऊ के कृष्णा वर्मा ने स्वर्ण, महराजगंज के दीपांश सोनी ने रजत एवं इटावा के रूद्र प्रताप व शाहजहांपुर के मुश्फिक बेग ने कांस्य पदक जीते। बालिका सब जूनियर अंडर-29 किग्रा में लखनऊ की अनिका चौहान ने स्वर्ण, लखनऊ की सृष्टि कश्यप ने रजत एवं लखनऊ की आयरा मंसूरी व बरेली की दिव्यांशी सिंह ने कांस्य पदक जीते। बालिका सब जूनियर अंडर-26 किग्रा में उर्वशी ने स्वर्ण, पंखुड़ी वर्मा ने रजत एवं आराध्या वर्मा व लक्ष्मी चौधरी (सभी लखनऊ) ने कांस्य पदक जीते।

लखनऊ की अर्नवी ने मेरठ की गर्विता को दी मात, आगरा के अतीक ने अलीगढ़ के सक्षम को हराया

एजेंसी

लखनऊ। बी.बी.डी. यू.पी. बैडमिंटन अकादमी में चल रही अण्डर-13 में प्राईज मनी एक लाख योनेक्स सनराईज यू.पी. स्टेट मेजर बैडमिन्टन चैम्पियनशिप में प्री क्वार्टर, क्वार्टर व सेमीफाइनल के मैच खेले गये। इसमें अण्डर-13 बालिका वर्ग एकल के सेमीफाइनल में लखनऊ की अर्नवी पाठक ने गर्विता त्रिपाठी (मेरठ) को 21-12, 21-16 व दूसरे एकल सेमीफाइनल में वान्या चौधरी (गौतमबुद्ध नगर,नोएडा) ने मान्या सिंह (मेरठ) को 19-21, 21-9, 21-19 से हराकर फाइनल में अपना स्थान बनाया।

बालक वर्ग एकल के सेमीफाइनल में अतीक अहमद (आगरा) ने सक्षम परासर (अलीगढ़) को 21-19, 21-15 तथा अंकुर प्रताप सिंह (आगरा) ने कुशाग्र द्विवेदी (लखनऊ) को 21-11, 21-17 से हराकर फाइनल में प्रवेश किया। बालक वर्ग युगल के सेमीफाइनल में अतीक अहमद व अंकुर प्रताप सिंह (आगरा) ने कानपुर के कन्दर्प खत्री व शारदूल खत्री को 21-12, 21-12 तथा द्वितीय सेमीफाइनल में वार्चस्व सेन (गुरूगोविन्द सिंह स्पोर्ट्स कालेज व वर्धन राज मधूरिया (पिलीभीत) ने आगरा के शौर्य चौधरी व शिवांश सारास्वत को 21-16, 21-17 से हराकर फाइनल में प्रवेश किया। रविवार को फाइनल मैच खेले जायेंगे, जिसमें बालिका एकल वान्या चौधरी (नोएडा) व अर्नवी पाठक (लखनऊ) के मध्य, बालक एकल अंकुर प्रताप सिंह व अतीक अहमद (आगरा) के मध्य तथा बालक युगल अतीक अहमद व अंकुर प्रताप सिंह (आगरा) व वार्चस्व सेन (गुरूगोविन्द सिंह स्पोर्ट्स कालेज व वर्धन राज मधूरिया (पिलीभीत) के मध्य तथा बालिका युगल गर्विता त्रिपाठी (मेरठ), वान्या चौधरी (नोएडा) व अर्नवी पाठक (लखनऊ) मान्या सिंह (मेरठ) के मध्य खेले जायेंगे।

बीएसएनएल के सीएमडी पुरवार का कार्यकाल बढ़ाने से इनकार, दूरसंचार विभाग के अधिकारी को अतिरिक्त प्रभार

एजेंसी

नई दिल्ली। बीएसएनएल के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक पी के पुरवार का सेवा विस्तार देने से सरकार ने इनकार कर दिया है। आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक दूरसंचार विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी रॉबर्ट जे रवि को कार्यभार सौंपा गया है। पुरवार ने जुलाई 2019 में पांच साल के लिए बीएसएनएल के सीएमडी के रूप में कार्यभार संभाला था और विस्तार के लिए आवेदन किया था, जिसे दूरसंचार विभाग ने खारिज कर दिया था।

रवि ए रॉबर्ट जेरार्ड के पास 14 जनवरी तक रहेगा प्रभार

कैबिनेट की नियुक्ति समिति (एसीसी) ने आदेश में कहा कि बीएसएनएल के सीएमडी प्रवीण कुमार पुरवार के कार्यकाल को 14 जुलाई से विस्तार न करने के लिए प्रस्ताव को मंजूरी दे दी गई है।

एसीसी ने 15 जुलाई से छह महीने की अवधि के लिए रवि ए रॉबर्ट जेरार्ड को सीएमडी एमटीएनएल और सीएमडी बीबीएनएल के साथ सीएमडी बीएसएनएल के पद का अतिरिक्त प्रभार सौंपने के दूरसंचार विभाग के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। अब वह 14 जनवरी 2025 तकया अगले आदेश तक अतिरिक्त प्रभार संभालेंगे।

पुरवार के कार्यकाल के दौरान तीन राहत पैकेज दिए गए

पुरवार के कार्यकाल के दौरान, सरकार ने बीएसएनएल को तीन लाख करोड़ के तीन पुनरुद्धार पैकेज दिए। ये पैकेज बीएसएनएल को चालू करने, 4जी और 5जी सेवाओं के रोलआउट के साथ ही रिलायंस जियो, एयरटेल कंपनियों से प्रतिस्पर्धा करने के लिए सक्षम बनाने के लिए दिए गए थे।पहला पैकेज जो सरकार ने स्वीकृत किया था, वह 69 हजार करोड़ रुपये का था। जिसमें बीएसएनएल के लिए लगभग 51 से 52 हजार करोड़ रुपये शामिल थे।

बैंकिंग छोड़ यूट्यूबर बनीं निश्चा, एक साल में की आठ करोड़ की कमाई

नई दिल्ली। सपने पूरे करने का जुनून और लोगों की मदद के लिए एक दशक तक बैंकिंग क्षेत्र में काम करने वाली निश्चा शाह ने कुछ ऐसा किया तो काफी चुनौतीभरा था। कॉरपोरेट जगत में काम करने वाली शाह ने कैमरे के लिए अपनी छह अंकों के वेतन को छोड़ा और यूट्यूब से नाता जोड़ लिया। निश्चा ने यूट्यूब के जरिये लोगों को निवेश करने के तरीके सिखाने शुरू किए। उनका रिस्क सफलता में तब्दील हुआ और एक साल में उन्होंने बैंकिंग के मुकाबले चार गुना अधिक आठ करोड़ रुपये की कमाई की। निश्चा ने बताया कि 2022 तक वह लंदन के क्रेडिट एग्रीसोल में एसोसिएट डायरेक्टर थी। तब उनका सालाना कमाई 256000 डॉलर (करीब दो करोड़ रुपये) थी। अच्छी जॉब और कमाई होने के बाद भी अधूरापन लगता था। बैंकर के तौर पर नौकरी चुनौतीपूर्ण और बौद्धिक रूप से प्रेरित नहीं कर पा रही थी। निश्चा ने बताया कि मैं कमाई के साथ लोगों की मदद का तरीका खोज रही थी।

जनवरी 2023 में छोड़ी नौकरी

निश्चा शाह ने जनवरी 2023 में नौकरी छोड़ दी और यूट्यूबर पर चैनल बनाकर पूरी तरह कंटेट क्रिएटर बन गईं और पर्सनल फाइनेंस को लेकर वीडियो बनाने लगीं। आखिरकार निश्चा की मेहनत रंग लाई और मई 2023 से मई 2024 के बीच उन्होंने यूट्यूब वीडियो, कारपोरेट संवाद और कोर्स व उत्पादों की बिक्री के जरिये आठ करोड़ रुपये कमाए। निश्चा ने बताया कि मैंने बैंकिंग के मुकाबले चार गुना ज्यादा कमाया। पैसे के पीछे भागने की जगह अब मैं अपने जुनून के साथ अच्छा कर पा रही हूं और खुशी महसूस करती हूं।

यात्री वाहनों की बिक्री अप्रैल-जून तिमाही में 10 लाख पार

नई दिल्ली। यूटिलिटी गाड़ियों की जबरदस्त मांग के दम पर देश में यात्री वाहनों की थोक बिक्री चालू वित्त वर्ष की अप्रैल-जून तिमाही में पहली बार 10 लाख के पार पहुंच गई। इस अवधि में कुल 10,26,006 यात्री वाहन बिके। यह आंकड़ा 2023-24 की समान तिमाही में बिके 9,96,565 इकाइयों की तुलना में 2.95 फीसदी अधिक है। हालांकि, यात्री कारों की बिक्री में गिरावट दर्ज की गई है। सोसायटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स (सियाम) के आंकड़ों के मुताबिक, अप्रैल-जून तिमाही में 3,41,293 यात्री कारें बिकीं। यह आंकड़ा एक साल पहले की समान तिमाही में बिकीं 4,13,723 इकाइयों की तुलना में 17 फीसदी कम है। वैन की बिक्री सालाना आधार पर 9 फीसदी बढ़कर 38,919 इकाई पहुंच गई।

यूटिलिटी वाहनों का 63 फीसदी योगदान

यात्री वाहनों की कुल रिकॉर्ड बिक्री में यूटिलिटी गाड़ियों का 63 फीसदी योगदान रहा। अप्रैल-जून तिमाही में यूटिलिटी वाहनों की बिक्री 18 फीसदी की मजबूत वृद्धि के साथ 6,45,794 इकाई पहुंच गई। एक साल पहले की समान तिमाही में यह आंकड़ा 5,47,194 इकाई था।

नागरिकों पर टैक्स का बोझ बढ़ाने की शर्त के साथ पाकिस्तान की मदद को IMF तैयार

इस्लामाबाद। आर्थिक संकट से जूझ रहे पाकिस्तान की मदद अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) करेगा। आईएमएफ ने कर संग्रह बढ़ाने की शर्त के साथ पाकिस्तान को तीन साल के लिए सात अरब डॉलर का ऋण देने को मंजूरी दी है। आईएमएफ के कार्यकारी बोर्ड के मुताबिक देश में आर्थिक स्थिरता बनाने के लिए स्टैंड बॉय अरेंजमेंट 2023 के तहत आईएमएफ और पाकिस्तान के अधिकारियों में समझौते पर सहमति बनी। समझौते को लेकर आईएमएफ के मिशन प्रमुख नाथन पोर्टर के नेतृत्व में आईएमएफ टीम ने 13 से 23 मई तक इस्लामाबाद में पाकिस्तानी अधिकारियों से चर्चा की थी। अधिकारियों ने बताया कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य व्यापक आर्थिक स्थिरता को मजबूत करने और नकदी संकट से जूझ रहे देश का समावेशी और लचीला विकास करना है।

पेटीएम से बाहर हुई सॉफ्टबैंक, जून तिमाही में 15 करोड़ डॉलर का उठाया घाटा

एजेंसी

नई दिल्ली। संकट की दौर से गुजर रही ऑनलाइन पेमेंट मंच पेटीएम को एक और झटका लगा है। जापान की इनवेस्टमेंट बैंक सॉफ्टबैंक ने पेटीएम की पैरेंट कंपनी वन97 कम्युनिकेशन में अपनी पूरी हिस्सेदारी बेच दी है। बैंक ने अप्रैल-जून तिमाही में 15 करोड़ डॉलर का घाटा होने के बाद यह कदम उठाया है। सूत्रों ने दी जानकारी में बताया कि जापान की सॉफ्टबैंक ने 10-12 फीसदी के नुकसान के साथ पेटीएम से अपना कारोबार समेट लिया है। जापान की सॉफ्टबैंक निवेश शाखा सॉफ्टबैंक विजन फंड अप्रैल-जून तिमाही में लगभग 150 मिलियन डॉलर के नुकसान के साथ पेटीएम से

बाहर हो गई है। साल 2021 में कंपनी के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) से पहले सॉफ्टबैंक के पास पेटीएम में करीब 18.5 फीसदी हिस्सेदारी थी।

उल्लेखनीय है कि जापान की सॉफ्टबैंक ने 2017 में किस्तों में पेटीएम ब्रांड की पैरेंट कंपनी वन97 कम्युनिकेशंस में करीब 1.5 बिलियन डॉलर का निवेश किया था।

दूसरा मेघालय अनानास महोत्सव, 2024 चल रहा है राजधानी में

एजेंसी

नई दिल्ली। मेघालय के कृषि और किसान कल्याण मंत्री डॉ. एम. अम्पारीन लिंगदोह ने राजधानी में चल रहे दूसरे मेघालय अनानास महोत्सव 2024 में कहा कि उनका राज्य अपनी समृद्ध कृषि-जलवायु परिस्थितियों के साथ अद्वितीय उपज का खजाना है।

राजधानी में चल रहे इस पांच दिवसीय महोत्सव में उन्होंने कहा कि यह महोत्सव अनानास को दुनिया भर में बढ़ावा देने के सरकार के प्रयासों के साथ मिलकर, राज्य के किसानों और उद्यमियों के लिए एक अनुकूल आर्थिक वातावरण के विकास के लिए मेघालय की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। उन्होंने कहा कि सरकार ने बुनियादी ढांचे में 5.63 करोड़ रुपये और कार्यशील पूंजी में 1.39 करोड़ रुपये निवेश किए हैं, जिसमें 2023 तक अनानास के लिए विशेष रूप से 78 लाख रुपये विशेष रूप से आवंटित किए गए हैं। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप जबरदस्त उपलब्धियां हासिल हुई हैं, जिसमें लुलु ग्रुप, अबू धाबी को 4.36 टन अनानास का निर्यात और करीब 100 टन की घरेलू बाजार पहुंच और यूरोपीय संघ के बाजारों में लगभग 300 टन का सफल निर्यात शामिल है। इन पहलों ने किसानों की आय को 122 प्रतिशत तक बढ़ा दिया है, जिससे सीधे रूप से 300 से अधिक किसानों को लाभ हुआ है और अप्रत्यक्ष रूप से मेघालय के 5000 से अधिक फल उत्पादकों को लाभ पहुंचा है।किसानों की आय दोगुना करने के उद्देश्य से, सरकार ने उच्च मूल्य वाली वाणिज्यिक फसलों के लिए मिशन-मोड प्रोजेक्ट्स की शुरुआत की है। उन्होंने कहा कि हल्दी, अदरक, मशरूम, मधुमक्खी पालन, मसाला, खासी मंदारिन, अनानास और अन्य को कवर करने वाले ये प्रोजेक्ट्स समग्र, समुदाय-केंद्रित प्रयासों के लिए डिज़ाइन किए गए हैं, जिनका मुख्य लक्ष्य किसानों का भला करना है। उन्होंने कहा, ÷जैसा कि हम आगे देखते हैं, हम वैश्विक बाजार में मेघालय के अनानास को वैश्विक बाजार में एक नाम देने के लिए समर्पित हैं। साथ मिलकर, हम मेघालय के कृषि परिदृश्य के लिए एक सशक्त, आत्मनिर्भर, और समृद्ध भविष्य बना सकते हैं।

जी-7 व्यापार मंत्रियों की बैठक में भाग लेने रेजियो कैलाब्रिया का दौरे करेंगे गोयल

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल जी-7 व्यापार मंत्रियों की बैठक के आउटरीच सत्र में भाग लेने के लिए 16-17 जुलाई को इटली के रेजियो कैलाब्रिया का दौरा करेंगे। इससे पहले गोयल 14 और 15 जुलाई को स्विट्जरलैंड में अपने समकक्षों के साथ व्यापारिक और आधिकारिक बैठकों में शामिल होंगे।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने जारी बयान में बताया कि केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री गोयल 16 और 17 जुलाई को इटली के रेजियो कैलाब्रिया का दौरा करेंगे। इस यात्रा के दौरान गोयल जी-7 व्यापार मंत्रियों की बैठक के आउटरीच सत्र में भाग लेंगे। अपने यात्रा के दौरान गोयल जी-7 देशों और अन्य भाग लेने वाले देशों के व्यापार मंत्रियों के साथ द्विपक्षीय बैठकों में भी शामिल होंगे,

जिससे वैश्विक व्यापार और निवेश साझेदारी के लिए भारत की प्रतिबद्धता को बल मिलेगा।मंत्रालय ने बताया कि केंद्रीय वाणिज्य मंत्री अपने इटली दौरे से पहले 14-15 जुलाई को स्विट्जरलैंड में अपने समकक्षों के साथ व्यापारिक और आधिकारिक बैठकों में भाग लेने के लिए मौजूद रहेंगे। ये बैठक यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ (ईएफटीए) व्यापार और आर्थिक भागीदारी समझौते (टीईपीए) के कार्यान्वयन और ईएफटीए द्वारा की गई 100 बिलियन यूएस डॉलर की निवेश प्रतिबद्धताओं के लिए रोडमैप तैयार करने पर केंद्रित होगी। गोयल के इस दौरे का उद्देश्य भारत और स्विट्जरलैंड के बीच द्विपक्षीय आर्थिक और व्यापक साझेदारी को और मजबूत करना, गहरे आर्थिक संबंधों और आपसी विकास को बढ़ावा देना है। उल्लेखनीय है कि भारत का दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनना इसकी गतिशील आर्थिक स्थिति और मजबूत विकास क्षमता का प्रमाण है। इन उच्च-स्तरीय बैठकों में पीयूष गोयल की भागीदारी भारत की आर्थिक कूटनीति को आगे बढ़ाएगी, जिससे वैश्विक मंच पर देश के हितों को बढ़ावा मिलेगा।

औद्योगिक गतिविधियों में सुधार, मई में औद्योगिक उत्पादन वृद्धि 5.9 प्रतिशत रही

नई दिल्ली। देश में औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) के आधार पर मई, 2024 में औद्योगिक उत्पादन वृद्धि वार्षिक आधार पर 5.9 प्रतिशत रही। अप्रैल, 24 में वृद्धि दर पांच प्रतिशत और पिछले साल मई में 5.7 प्रतिशत थी।

चालू वित्त वर्ष के पहले दो महीनों अप्रैल, मई 2024 में औद्योगिक उत्पादन वृद्धि संचयी आधार पर 5.4 प्रतिशत रही, जो एक साल पहले इसी दौरान 5.1 प्रतिशत थी। कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय द्वारा जारी औद्योगिक उत्पादन के आंकड़ों के अनुसार मई, 24 में खनिज, विनिर्माण और बिजली क्षेत्र के उत्पादन की वृद्धि दर सालाना आधार पर क्रमशः 6.6 प्रतिशत, 4.6 प्रतिशत और 13.7 प्रतिशत थी। मई, 2023 में इन क्षेत्रों की उत्पादन वृद्धि क्रमशः 6.4, 6.और 0.9 प्रतिशत थी। उपयोग के आधार पर वर्गीकृत उत्पादन के आंकड़ों के अनुसार इस बार मई में पूंजीगत उद्योग की वृद्धि दर 2.5 प्रतिशत रही। पिछले साल इसी माह इस क्षेत्र की वृद्धि दर 8.1 प्रतिशत थीं।

मई में टिकाऊ उपभोक्ता सामान और गैर टिकाऊ उपभोक्ता सामान उद्योग की वृद्धि दर क्रमशः 12.3 प्रतिशत और 2.3 प्रतिशत रही। एक साल पहले इसी माह इन क्षेत्रों में वृद्धि क्रमशः 1.5 प्रतिशत और 8.9 प्रतिशत थी। प्राथमिक वस्तुओं के क्षेत्र में उत्पादन वृद्धि पिछले साल मई के 3.6 प्रतिशत की तुलना में सुधर कर 7.3 प्रतिशत रही। अवसंरचना एवं विनिर्माण क्षेत्र से संबंधित सामान बनाने वाले उद्योगों की वृद्धि इस बार मई में 6.9 प्रतिशत रही जबकि पिछले साल इसी माह यह 13.0 प्रतिशत थी।

टमाटर के दाम में जल्द गिरावट के आसार, खुदरा भाव 75 रुपये प्रति किलो

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर में टमाटर की कीमत 75 रुपये प्रति किलोग्राम तक पहुंच गई है। प्याज भी 50 रुपये प्रति किलोग्राम बिक रहा है लेकिन अब जल्द ही टमाटर और प्याज की बढ़ी कीमतों से राहत मिलने की उम्मीद है।

उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय के एक अधिकारी ने बताया कि आपूर्ति में बाधा की वजह से टमाटर और प्याज सहित अन्य सब्जियों की बढ़ी कीमतों के जल्द ही स्थिर होने की उम्मीद है। दक्षिणी राज्यों से आपूर्ति बढ़ने से आने वाले हफ्तों में इनकी कीमतों में नरमी आने की उम्मीद है। फिलहाल राजधानी दिल्ली में हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड से टमाटर की आपूर्ति हो रही है।

दरअसल राजधानी दिल्ली सहित कुछ अन्य शहरों में टमाटर, प्याज और आलू सहित अन्य सब्जियों की कीमतें बढ़ी हैं। बारिश के कारण आपूर्ति बाधित होने से नई दिल्ली में टमाटर का खुदरा भाव 75 रुपये प्रति किलोग्राम तक पहुंच गई है लेकिन बारिश के कारण आपूर्ति शृंखला में

और रुकावट नहीं आती है तो इसकी कीमतों में कमी आने की संभावना जताई जा रही है। मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक 12 जुलाई को दिल्ली में टमाटर की खुदरा कीमत 75 रुपये प्रति किलोग्राम थी, जो एक साल पहले इसी अवधि में 150 रुपये प्रति किलोग्राम थी। मुंबई में टमाटर का भाव 83 रुपये प्रति किलोग्राम था, जबकि कोलकाता में यह 80 रुपये प्रति किलोग्राम मिल रहा है।

शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह 24.07 फीसदी उछल कर 5.74 लाख करोड़ रुपये पर

एजेंसी

नई दिल्ली। अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर अच्छी खबर आई है। चालू वित्त वर्ष 2024-25 के पूर्ण बजट से पहले केंद्र सरकार का खजाना भर गया है। शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह अबतक 24.07 फीसदी उछल कर 5.74 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गया। इससे पिछले वित्त वर्ष 2023-24 की इसी अवधि में शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह 4.80 लाख करोड़ रुपये था। केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) की ओर से जारी आंकड़ों के मुताबिक 11 जुलाई, 2024 तक शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह 24.07 फीसदी बढ़कर 5.74 लाख करोड़ रुपये रहा। इससे पिछले वित्त वर्ष 2023-24 की समान अवधि में शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह 4.80 लाख करोड़ रुपये रहा था। सीबीडीट के मुताबिक इसमें 2.1 लाख करोड़ रुपये का कॉरपोरेट टैक्स और 3.46 लाख करोड़ रुपये का व्यक्तिगत आयकर शामिल है। व्यक्तिगत आयकर के आंकड़ों में प्रतिभूति लेनदेन कर (एसटीटी) से प्राप्त इनकम भी शामिल है।

सीबीडीटी ने बताया कि जून महीने में रिफंड के समायोजन के बाद प्रत्यक्ष कर संग्रह 4.62 लाख करोड़ रुपये एकत्र रहा जो सालाना आधार पर 20.99 फीसदी की वृद्धि है। इसमें 1.8 लाख करोड़ रुपये का कॉरपोरेट टैक्स और 2.81 करोड़ रुपये का व्यक्तिगत आयकर शामिल है। गौरतलब है कि संसद का बजट सत्र 22 जुलाई से शुरू हो रहा है। बजट सत्र के दूसरे दिन ही 23 जुलाई को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण 2024-25 का पूर्ण बजट पेश लोकसभा में करने वाली हैं।

पेट्रोल और डीजल की कीमतों में टिकाव

नई दिल्ली। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में नरमी के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम में कोई बदलाव नहीं हुआ, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपये प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपये प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपये प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपये प्रति लीटर पर रहा।

ब्रिटिश काउंसिल और एचएसबीसी इंडिया ने भारत में 'क्लाइमेट चेंज - सीड्स फॉर ट्रैन्ज़िशन इंडिया' नामक परियोजना की शुरुआत की

नई दिल्ली। शैक्षिक अवसरों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए यूके के अंतरराष्ट्रीय संगठन ब्रिटिश काउंसिल, ने एचएसबीसी इंडिया के साथ साझेदारी में 'क्लाइमेट चेंज - सीड्स फॉर ट्रैन्ज़िशन इंडिया' नामक परियोजना की शुरुआत की है। क्लाइमेट चेंज - सीड्स फॉर ट्रैन्ज़िशन इंडिया का उद्देश्य भारत में युवाओं और समुदायों को जलवायु परिवर्तन के आसन्न प्रभाव के प्रति रेसिलिएंट होने और नेट जीरो में बदलाव के अवसरों में योगदान करने के लिए आवश्यक कौशल से लैस करना है। यह कार्यक्रम इग्ज़ेक्यटिव स्कॉट मैकडोनाल्ड ने कहा, ब्रिटिश काउंसिल में हम युवाओं को जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान से सशक्त बनाने के लिए तेजी से महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं। एचएसबीसी इंडिया के चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर हितेंद्र दवे ने कहा, ब्रिटिश काउंसिल के साथ सहयोग और ऐसे कार्यक्रमों के सह-

प्रतिबद्ध हैं। 'क्लाइमेट चेंज - सीड्स फॉर ट्रैन्ज़िशन इंडिया' नामक परियोजना पर एचएसबीसी के साथ हमारी साझेदारी सस्टेनेबल भविष्य के हमारे साझा दृष्टिकोण को दर्शाती है। आवश्यक जलवायु रेसिलिएंस स्किल कौशल से लैस हो कर युवा हरित अर्थव्यवस्थाओं में परिवर्तन का नेतृत्व कर सकते हैं और अपने समुदायों में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। ये कौशल हमारे ग्रह और उसके प्राकृतिक संसाधनों के जीवन के अनुमानों पर विचार करते समय निर्माण का हमारा लंबा इतिहास रहा है जो एक बड़े सामाजिक उद्देश्य को प्राप्त करने में मदद करते हैं। जलवायु कौशल कार्यक्रम पर हमारी साझेदारी युवाओं और शिक्षा पर केंद्रित होगी, जो युवा पीढ़ी को जलवायु परिवर्तन को समझने और उसके अनुकूल होने के लिए तैयार करने में हमारी संयुक्त प्रतिबद्धता को दर्शाती है। साथ मिलकर, हमारा लक्ष्य भारत में हाशिए पर पड़े युवा समुदायों के बीच जलवायु साक्षरता और रोजगार क्षमता में सुधार करना है।

वैश्विक आर्थिक आंकड़े और तिमाही नतीजों पर रहेगी बाजार की नजर

एजेंसी

मुंबई। विश्व बाजार के मिलेजुले रुख के बीच स्थानीय स्तर पर मुनाफावसूली के दबाव के बावजूद टीसीएस के मजबूत परिणाम से बीते सप्ताह आधे प्रतिशत से अधिक चढ़े घरेलू शेयर बाजार की अगले सप्ताह वैश्विक आर्थिक आंकड़ों के साथ ही कंपनियों के चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही के नतीजों पर नजर रहेगी।

बीते सप्ताह बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 522.74 अंक अर्थात 0.7 प्रतिशत मजबूत होकर सप्ताहांत पर 80519.34 अंक पर पहुंच गया। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 178.3 अंक यानी 0.73 प्रतिशत चढ़कर 24502.15 अंक पर रहा। समीक्षाधीन सप्ताह में दिग्गज कंपनियों की तरह बीएसई की मझौली और छोटी कंपनियों के शेयरों में भी लिवाली हुई। इससे मिडकैप 70.41 अंक अर्थात 0.2 प्रतिशत बढ़कर सप्ताहांत पर 47508.26 अंक और स्मॉलकैप 140.71 अंक यानी 0.3 प्रतिशत की बढ़त लेकर 54013.25 अंक हो गया।

विश्लेषकों के अनुसार, वित्त वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही की आय के कमजोर पूर्वानुमान और विकासोन्मुख बजट की उम्मीद के कारण बाजार में चिंता और उत्साह का मिश्रण बना रहा। दूसरी ओर, वित्त वर्ष 2025 के लिए मजबूत जीडीपी के मार्गदर्शन ने निवेशकों की धारणा को मजबूत किया। वैश्विक मोर्चे पर अमेरिका में मुद्रास्फीति के अनुमान से कम होकर एक वर्ष के निचले स्तर पर आने से निवेशकों की आशा बढ़ी है। इससे सितम्बर में अमेरिकी फेड द्वारा ब्याज दर में कटौती की संभावना 90 प्रतिशत तक बढ़ गई है, जो डॉलर सूचकांक में गिरावट से स्पष्ट है। उम्मीद हैं कि चालू आय सीजन के कारण स्टॉक-विशिष्ट गतिविधियों में तेजी आएगी। वास्तव में आय और परिदृश्य की अच्छी शुरुआत के कारण अगले सप्ताह आईटी समूह सुर्खियों में रहेगा। मानसून में अच्छी प्रगति और कारोबार में तेजी की उम्मीदों से एफएमसीजी शेयरों ने मुख्य सूचकांकों से बेहतर प्रदर्शन किया। अगले सप्ताह निवेशक चीन के सकल घरेलू उत्पाद, यूरोजोन की खुदरा महंगाई, ईसीबी की मौद्रिक नीति समीक्षा बैठक के निर्णय और अमेरिकी फेड अध्यक्ष जेरोम पॉवेल के वक्तव्य जैसे आर्थिक आंकड़ों पर सावधानीपूर्वक नजर रखेंगे। इनके अलावा स्थानीय स्तर पर अगले सप्ताह दिग्गज कंपनियों के चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही के परिणाम का भी बाजार पर असर रहेगा। अगले सप्ताह रिलायंस, इंफोसिस, विप्रो, एशियन पेंट, जेएसडब्ल्यू स्टील, अल्ट्रासिमको, बजाज ऑटो, इंडियन बैंक, महाराष्ट्र बैंक, सेंट्रल बैंक और बीपीसीएल जैसी दिग्गज कंपनियों के तिमाही नतीजे आने वाले हैं। बीते सप्ताह बाजार तीन दिन गिरावट और दो दिन तेजी पर रहा। एशियाई बाजरों की गिरावट के दबाव में स्थानीय स्तर पर कंज्यूमर ड्यूरेबल्स, दूरसंचार, ऑटो और धातु समेत तेरह समूहों में हुई बिकवाली से सोमवार को सेंसेक्स 36.22 अंक उतरकर 79,960.38 अंक और निफ्टी 3.30 अंक फिसलकर 24,320.55 अंक रह गया।

विश्व बाजार की तेजी के साथ ही स्थानीय स्तर पर मॉनसून एवं खरीफ फसलों की बुवाई की प्रगति से उत्साहित निवेशकों की ऑटो, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स, एफएमसीजी, सीडी और रियल्टी समेत चौदह समूहों में हुई लिवाली की बदौलत मंगलवार को सेंसेक्स 391.26 अंक की छलांग लगाकर 80,351.64 अंक और निफ्टी 112.65 अंक की मजबूती के साथ 24,433.20 अंक हो गया।

अंतर्राष्ट्रीय बाजार के मिलेजुले रुख के बीच स्थानीय स्तर पर ऊंचे भाव पर हुई मुनाफावसूली के दबाव में बुधवार को सेंसेक्स 426.87 अंक का गोता लगाकर 79,924.77 अंक और निफ्टी 108.75 अंक टूटकर 24,324.45 अंक पर बंद हुआ। विश्व बाजार में तेजी के बावजूद स्थानीय स्तर पर बजाज फाइनेंस, मारुति, रिलायंस, एनटीपीसी और आईसीआईसीआई बैंक समेत पंद्रह दिग्गज कंपनियों में हुई बिकवाली से गुरुवार को सेंसेक्स 27.43 अंक फिसलकर 79,897.34 अंक और निफ्टी 8.50 अंक की मामूली गिरावट के साथ 24,315.95 अंक पर बंद हुआ। वहीं, सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) क्षेत्र की दिग्गज कंपनी टाटा कन्सल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) के तिमाही नतीजे उम्मीद से बेहतर रहने की बदौलत उसके शेयरों के साढ़े छह प्रतिशत से अधिक चढ़ने से शुक्रवार को सेंसेक्स 622.00 अंक की छलांग लगाकर 80,519.34 अंक के सार्वकालिक उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। इसी तरह निफ्टी 186.20 अंक उछलकर 24,502.15 अंक के नये रिकॉर्ड स्तर पर बंद हुआ।

खनिज ब्लॉकों की नीलामी में पिछड़ा झारखंड, केंद्र ने कहा- आप कदम नहीं उठाएंगे तो हम नीलाम करेंगे

एजेंसी

नई दिल्ली। सोने की खान और खनिज ब्लॉकों की नीलामी में झारखंड पिछड़ रहा है। झारखंड सरकार ने अब तक 10 खनिज ब्लॉकों की नीलामी नहीं की है। इस पर केंद्रीय खान मंत्रालय ने नाराजगी जताई है। केंद्र ने नाराजगी जताते हुए चेतावनी दी कि यदि झारखंड नीलामी नहीं कर पाता है तो उनके स्तर से नीलामी की जाएगी। केंद्र की ओर से कहा गया कि ये ब्लॉक सामान्य और प्रारंभिक स्तर के हैं। दस ब्लॉकों में एक तांबे की खदान, एक चूना पत्थर और एक ग्रेफाइट की खदान शामिल है। खनन नियम 2021 के मुताबिक अगर कोई राज्य सरकार तय अवधि में खदानों की नीलामी नहीं कर पाती है तो केंद्र सरकार खनिज ब्लॉकों को बेच सकती है। खनिज ब्लॉकों की नीलामी में झारखंड सरकार लगातार पिछड़ रही है। भारतीय भू वैज्ञानिक सर्वेक्षण

विभाग ने झारखंड सरकार को 38 भू वैज्ञानिक रिपोर्ट सौंपी थी, मगर सरकार ने केवल पांच रिपोर्ट का उपयोग नीलामी के लिए किया। सूत्र बताते हैं कि झारखंड सरकार ने दिसंबर 2021 तक 15 ब्लॉकों की नीलामी करने की बात कही थी, लेकिन महज चार ब्लॉकों की ही नीलामी की जा सकी। बाकी 11 खदानों की नीलामी अब तक नहीं हो सकी है। इनमें सबसे अहम पोटॉश ब्लॉक को अब केंद्र सरकार नीलाम करेगी। जबकि बाकी बचे 10 ब्लॉकों को राज्य सरकार को बेचना है। इस पर खान मंत्रालय ने नाराजगी जताते हुए जल्द से जल्द ब्लॉकों को नीलाम करने के लिए कहा है। ऐसा न करने पर खान मंत्रालय ब्लॉकों को नीलाम करेगा। बता दें कि मौजूदा वित्तीय वर्ष में अब तक देश में 12 खनिज ब्लॉकों की नीलामी की गई है। ये सभी राजस्थान में हैं। ये ब्लॉक अंबुजा सीमेंट्स लिमिटेड और जेके सीमेंट जैसी कंपनियों को मिले हैं।

संरक्षक: संजय शुक्ला, (सत्यम शिवम शुभम पीजी वलां कॉलेज टिकरी)

सलाहकार संपादक:

उपसंपादक: राकेश द्विवेदी

सह सपांदक: मोहम्मद दानिश फारुखी,

सहायक संपादक: रिजवान सैफ खान,

सह संपादक: राम सिंह यादव

उक्त सभी पद अवैतनिक है

सबसे तेज प्रयागराज, मुद्रक, प्रकाशक, स्वामी संपादक हनुमान प्रसाद शुक्ल द्वारा विपिन इंटरप्राइजेस 1/6सी/1 मास्टर जरूहुल हसन रोड़, कटरा, प्रयागराज से मुद्रित कराकर, करीमुददीनपुर पोस्ट अटरामपुर नवाबगंज प्रयागराज से प्रकाशित। मो नं. 9452842169 । इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आ.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में होगा। आपत्तियां एक सप्ताह के अंदर ही स्वीकार की जाएगी। समाचार पत्र की जिम्मेदारी लेखक व संवाददाता की होगी